

हरिभूमि भिवानी-दादरी भूमि

रोहतक, रविवार, 17 अगस्त 2025

11 विपक्ष के नेताओं और संगठनों ने पुलिस की...



12 भारत की अस्मिता को चोट पहुंचाने वालों...



MK हॉस्पिटल का 1 साल का सफ़र

+ 1000+ सफल सर्जरी*

+ 30+ अनुभवी डॉक्टर्स की टीम*

+ 5000+ पेशेंट एडमिशन*

+ 50,000+ ओपीडी मरीजों की सेवा*



आपके भरोसे के लिए धन्यवाद!

+91 70 09 09 09 24

हरियाणा सरकार व आयुष्मान योजना पर इलाज उपलब्ध*

खबर संक्षेप

सुनैना चौटाला आज पहुंचेगी डिगावा मंडी भिवानी। इनलो नेत्री सुनैना चौटाला रविवार को डिगावा मंडी पहुंचेगी। सुनैना चौटाला डिगावा पहुंचकर मनीषा को इंसाफ दिलाने के लिए चल रहे धरने पर पहुंचेगी। इनलो के जिला प्रधान अशोक ढाणीमाहू ने कहा कि गांव ढाणी लक्ष्मण की बेटी की निर्मम हत्या की घटना हृदयविदारक है। इसे सुनते ही हर किसी की रूह कांप रही है। इनलो दोषियों के खिलाफ सख्त से सख्त कार्रवाई की मांग करती है। जिला प्रधान ने कहा कि घटना के चार दिन बाद में पुलिस के हाथ खाली हैं। इससे कई सवाल खड़े होते हैं। इनलो जिला प्रधान ने बताया कि रविवार को इनलो नेत्री सुनैना चौटाला डिगावा में धरना स्थल पर पहुंचेगी।

नंदीमुक्त होगा शहर, नप ने चलाया अभियान

खास बातें

- चार मशीन संचालकों से सड़कों पर चारा न डालने की गुजारिश
- अगर पशुपालक ने गाय छोड़ी तो उस पर पड़ेगी जुर्माने की मार : भवानी प्रताप

हरिभूमि न्यूज » भिवानी

अब शहर व राहगीरों के लिए राहत भरी खबर। अब शहर के लोगों तथा शहर के विभिन्न रास्तों से गुजरने वाले लोगों को आवारा पशुओं की समस्या से छुटकारा मिल जाएगी। चूंकि नगर परिषद ने शहर के विभिन्न चौक व चौराहों पर खड़े आवारा पशु तथा विभिन्न इलाकों से नंदी(सांड) पकड़ने का अभियान शुरू कर दिया। नप ने



भिवानी। शहर की सड़कों पर विचरते आवारा पशु तथा आवारा पशु पकड़ते नप कर्मचारी।



फोटो : हरिभूमि

अभियान चलाकर दर्जनों आवारा पशु, सांड को पकड़कर नंदीशाला में छोड़ा जा रहा है। वहीं नप चेयरपर्सन प्रतिनिधि भवानी प्रताप सिंह ने शहर के विभिन्न इलाकों में चारा काटने के लिए स्थापित की गई चारा मशीन संचालकों से सड़क किनारे व चौक चौराहों पर पशुओं के लिए चारा न रखे। अगर किसी व्यक्ति को पशुओं को चारा खिलाना है वे नंदीशाला या

नप ने एक दर्जन से ज्यादा सांड को पकड़ा

नगरपरिषद के कर्मचारियों ने शहर में अभियान चलाकर करीब एक दर्जन से ज्यादा नंदी व सड़कों पर घूमने वाले आवारा पशुओं को पकड़ा और वाहन में बैठाकर नंदीशाला में छोड़ा गया। टीम ने यह अभियान शहर के सबसे व्यस्त इलाकों से शुरू किया। घंटाघर चौक से आवारा पशुओं को एकत्रित करके वाहनों में चढ़ाया गया और उन सभी पशुओं को नंदीशाला में छोड़ा गया। इस दौरान नप चेयरपर्सन प्रतिनिधि भवानी प्रताप सिंह भी मौजूद रहे। उनका तर्क था कि जब तक सभी आवारा पशुओं को नहीं पकड़ा जाता। तब तक उनका यह अभियान जारी रहेगा।

गौशाला जाकर उन पशुओं के लिए चारा डलवाए। ताकि शहर

पशुपालक ने पशु छोड़े तो उन पड़ेगी मार

नगरपरिषद के अधिकारियों ने कहा कि जिन पशुओं का कोई मालिक नहीं है, उन पशुओं को पकड़कर नंदीशाला व गौशाला में छोड़ा जा रहा है। साथ ही लोगों से पशु न छोड़े जाने की गुजारिश की जा रही है। साथ ही नगरपरिषद ने शहर के पशु पालकों से आग्रह किया है कि वे किसी भी सूत में अपने पशुओं को सड़कों पर छोड़े। इनसे अनेक बार दुर्घटनाएं घट चुकी हैं। वाहनों के आवागमन में संकट पैदा कर रहे हैं। नप के अधिकारियों ने चेतावनी दी कि अगर किसी पशुपालक ने पशुओं को छोड़ा तो नप उनको पशुओं ले जाएगी और बाद में उन पर भारी भरकम जुर्माना भी किया जाएगा।

शहर होगा आवारा पशुओं से मुक्त: प्रीति भवानी प्रताप

नगरपरिषद चेयरपर्सन प्रीति भवानी प्रताप ने बताया कि शहर में जितने भी आवारा पशु सड़कों पर घूम रहे हैं। उन सभी को पकड़े जाने का अभियान शुरू किया गया है। सभी नंदीयों को पकड़ कर उनको नंदीशाला में छोड़ा जा रहा है। सभी आवारा पशु पकड़े जाने तक अभियान जारी रहेगा। उन्होंने पशुपालकों से पशु न छोड़े जाने की गुजारिश की। साथ ही उन्होंने चारा काटने वाली मशीन संचालकों से सड़क किनारे चारा न डालने की कही। चूंकि चारा खाने के लिए पशु सड़क व चौक व चौराहों पर पहुंच रहे हैं। जिस वजह से कई दुर्घटनाएं घट चुकी हैं।

की सड़कों पर आवारा पशुओं से निरीक्षण किया और आवारा पशु होने वाली परेशानियों से बचा जा सके। चेयरपर्सन प्रतिनिधि उनसे आवारा पशु पकड़े जाने की भवानी प्रताप सिंह ने शहर का जानकारी भी ली।

अगले तीन दिनों तक तेज हवा के साथ बारिश की संभावना: देवीलाल

भिवानी। कृषि विज्ञान केंद्र के मौसम वैज्ञानिक डॉ. देवीलाल ने बताया कि अभी तक मौसम खुशक ही रहा। हालांकि आसमान में बादलाई छाई रही, लेकिन बारिश नहीं हुई।

पर आज से मौसम में बदलाव आया है। बदलाव की वजह से आज से लेकर अगले तीन दिनों तक कहीं पर मध्यम तो कहीं पर तेज बारिश की संभावना है। बारिश के साथ तेज हवा भी चलने का अनुमान है।

उन्होंने बताया कि अभी तक जो बारिश हुई है। उससे जिन इलाकों में जलभराव हुआ है। वहां पर ज्यादातर कपास की फसलें प्रभावित हुई हैं, लेकिन जहां पर जलभराव नहीं है। वहां पर फसलों में बारिश का ज्यादा नुकसान नहीं है।

TATA की पेशकश

Festival of Diamonds

TANISHQ

SPARKLE DOESN'T STOP HERE
SCAN TO EXPLORE MORE

20% तक छूट
10,000+ डिज़ाइनों पर

जिंदगी के हर पहलू को दें अपनी चमक

TANISHQ x DE BEERS GROUP
For Natural Diamonds

To locate your nearest store and know more on 6366920017. Buy online at tanishq.co.in or Download our App *Conditions apply.

शोरूम :- विजय नगर, केएम सीनियर सेकेण्डरी स्कूल के पास, हांसी गेट, भिवानी टेली. 77290-93000

■ एसआईपी के अलावा भी कुछ विकल्प दे सकते हैं | ■ मोटा पैसा कमाने के लिए आपको रणनीति बनाकर आगे बढ़ना होगा | ■ रिटायरमेंट, बच्चों की शिक्षा या घर के लिए एसआईपी पर्याप्त नहीं



पत्नी के साथ मिलकर बनाएं कल की प्लानिंग

- ▶ 1, 2 नहीं इन 5 ऑप्शन को फॉलो करके फुल मोज में कटेगा बुढ़ापा
- ▶ रिटायरमेंट प्लानिंग केवल एक व्यक्ति नहीं, पूरे परिवार की जिम्मेदारी
- ▶ कपल मिलकर सही समय पर निवेश और फाइनेंशियल प्लान बनाएं

अपने भविष्य को सुरक्षित बनाने के लिए अपनी पत्नी के साथ मिलकर अच्छी प्लानिंग करें। इससे आपका बुढ़ापा मस्ती में कटेगा। कहा भी गया है कि रिटायरमेंट प्लानिंग एक व्यक्ति की नहीं, बल्कि पूरे परिवार की साझा जिम्मेदारी है। आने वाले कल को सुरक्षित करने के लिए सही समय पर सही इन्वेस्टमेंट प्लानिंग की बहुत जरूरत होती है। यही कारण है कि समय रहते रिटायरमेंट की प्लानिंग करना भी बहुत जरूरी होता है। आज के समय में रिटायरमेंट प्लानिंग केवल एक व्यक्ति के लिए नहीं, बल्कि पूरे परिवार के लिए एक शेयर होने वाली जिम्मेदारी होती है, खासकर कपल के लिए। अब आप रिटायरमेंट के लिए अपनी पत्नी के मिलकर बेहतर प्लानिंग करें। लाइफ के साथ मिलकर प्लानिंग बनाने से आप शानदार प्यूर बन सकते हैं।

बीमा स्कीम की समीक्षा करें
हर किसी के लिए एक सेफ रिटायरमेंट प्लानिंग के लिए बीमा बहुत जरूरी होता है। अपनी हेल्थ बीमा पॉलिसियों की समीक्षा करें और तय करें कि वे रिटायरमेंट के बाद के विकल्पों को कवर करती हैं। आपकी बढ़ती उम्र के साथ मेडिकल खर्च भी बढ़ते हैं, तो इसलिए पर्याप्त कवरेज होना हर किसी के लिए बहुत जरूरी होता है।

टाइम टू टाइम समीक्षा करें
आपकी रिटायरमेंट योजना हमेशा एक ऐसी नहीं रह सकती है जो इसलिए जीवन में बदलाव आते रहते हैं, तो ऐसे में अपनी वित्तीय योजना की समय-समय पर समीक्षा करना जरूरी है। और उसमें जरूरत के अनुसार बदलाव करना अहम होता है। हर साल या कुछ सालों में अपने निवेश, लक्ष्यों और बजट की समीक्षा करें ताकि आप सही रास्ते पर बने रहें। यानी कि वे कदम आपको और आपके जीवनसाथी को फाइनेंशियल स्थिरता और सुरक्षा के साथ-साथ एक आरामदायक और खुशहाल रिटायरमेंट के लिए तैयार करने में मदद कर सकते हैं।

खर्चों का आकलन करें
रिटायरमेंट के बाद की लाइफ के लिए जरूरी मंथली खर्चों का अनुमान लगाना बहुत जरूरी होता है। इसमें

करोड़पति बनना है तो आप जान लें निवेश के कुछ 'ब्लॉकबस्टर' टिप्स

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

आजकल ज्यादातर लोग, स्पेशली युवा, अपनी फाइनेंशियल प्लानिंग को पूरा करने के लिए सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) को अपना रहे हैं। एसआईपी शुरू करना फाइनेंशियल अनुशासन की दिशा में एक शानदार पहला कदम है, लेकिन, क्या केवल एसआईपी शुरू कर देना ही आने वाले कल के लिए काफी है? असल में लंबी अवधि के टारगेट जैसे रिटायरमेंट, बच्चों की शिक्षा या घर खरीदने के लिए, केवल एसआईपी करना पर्याप्त नहीं है। इसके लिए एक संपूर्ण और मजबूत प्लानिंग की आवश्यकता होती है। तो फिर आइए इस रिपोर्ट के जरिये जानते हैं निवेश के कुछ ब्लॉक बस्टर कदम जो आपको करोड़पति बनने में अहम भूमिका निभा सकते हैं और आपको कम समय में ही अच्छा मुनाफा दिलवाने में सक्षम हैं।

फाइनेंशियल टारगेट को परिभाषित करें

- एसआईपी तो बस एक निवेश का एक जरिया है, लेकिन टारगेट क्या है? सबसे पहले, आपको अपने सभी दीर्घकालिक लक्ष्यों को साफ रूप से परिभाषित करना चाहिए और एक गोल बनाकर आगे बढ़ना होगा।
- लक्ष्यों को पट्टा दें:** क्या आपका टारगेट 10 साल में बच्चों की हाई एजुकेशन है, 20 साल में रिटायरमेंट है, या 5 साल में घर के लिए डाउन पेमेंट है?
- लागत का अनुमान लगाएं:** हर टारगेट के लिए जरूरी राशि का अनुमान लगाएं, इसमें प्यूरच की महंगाई को भी शामिल करें। उदाहरण के लिए, अगर आज बच्चों की इंजीनियरिंग की पढ़ाई पर 20 लाख रुपये खर्च होते हैं, तो 15 साल बाद महंगाई के साथ यह राशि कहीं अधिक होगी।
- वर्षों जल्दी:** जब आपको पता होगा कि आपको कब और कितने पैसे की जरूरत हो सकती है, तभी आप सही निवेश रणनीति बना पाएंगे।



पोर्टफोलियो को विविधतापूर्ण बनाएं

- एसआईपी तो इक्विटी में है, लेकिन क्या इतना काफी है? 'अपने सारे अंडे एक ही टोकरी में न रखें' यह निवेश का सबसे पुराना और सबसे अहम नियम है।
- इक्विटी के अलावा निवेश करें:** हमेशा अपने पोर्टफोलियो में सिर्फ एसआईपी ही ना रखें। उसमें इक्विटी के साथ-साथ डेट और अन्य संपत्तियों का मिश्रण भी होना ही चाहिए।
- विविधता के विकल्प:** आप अपनी रिस्क लेने की क्षमता अनुसार पब्लिक प्रॉविडेंट फंड (पीपीएफ), फिक्सड डिपॉजिट (एफडी), राष्ट्रीय पेंशन योजना (एनपीएस), और यहां तक कि सोना या रियल एस्टेट जैसे ऑप्शन में भी निवेश कर सकते हैं।
- वर्षों जल्दी:** यह आपके पोर्टफोलियो में स्थिरता ला सकता है। यानी कि यदि शेयर बाजार में गिरावट आती है, तो आपके दूसरे निवेश आपके पोर्टफोलियो को गिरने से बचाते हैं।

बीमा और आपातकालीन निधि बनाएं

- आपकी यात्रा की सुरक्षा कैसे होगी? यानी कि एक मजबूत फाइनेंशियल योजना की नींव सुरक्षा पर टिकी होती है। अगर आप बिना बीमा और इमरजेंसी के निवेश करते हैं, तो एक भी दुर्घटना आपकी पूरी योजना को ध्वस्त कर सकती है।
- आपातकालीन निधि:** कम से कम 3 से 6 महीने के मासिक खर्चों के बराबर की राशि एक ऐसे खाते में रखें, जिसे आप आसानी से निकाल सकें। ये इमरजेंसी फंड नौकरी छूटने या मेडिकल इमरजेंसी जैसी स्थितियों में आपके एसआईपी को तोड़ने से बचाएगा।
- पर्याप्त बीमा:** अपने परिवार को फाइनेंशियल रूप से सेफ रखने के लिए पर्याप्त लाइफ इंश्योरेंस (खासकर टर्म प्लान) और हेल्थ इंश्योरेंस जरूर लें।
- वर्षों जल्दी:** यह आपके लॉन टर्म निवेश को अप्रत्याशित वित्तीय झटकों से बचाता है।

आज ही बना लें मुश्किल वक्त के लिए 'एटीएम'

सुरीबत हम सभी की लाइफ में कब आ जाए हममें से कोई नहीं जानता है, लेकिन सुरीबत से पार पाने के लिए इमरजेंसी फंड का होना बहुत जरूरी होता है। असल में इमरजेंसी फंड एक ऐसी धनराशि होती है, जिसे आप किसी भी अप्रत्याशित खर्च या वित्तीय संकट के समय यूज करने के लिए अलग से रखते हैं। यह आपको अचानक आई परेशानियों, जैसे नौकरी छूटना, मेडिकल इमरजेंसी या घर की मरम्मत आदि से निपटने में मदद करता है। इस रिपोर्ट में हम आपको बताएंगे कि इमरजेंसी फंड कैसे तैयार करें।

बजट बनाएं और लक्ष्य तय करें: आप सबसे पहले, अपने मंथली खर्चों का हिसाब लगाएं। इसके बाद आपका तय करें कि आपको कम से कम 3 से 6 महीने के खर्चों को कवर करने के लिए कितने फंड की जरूरत पड़ा सकती है। यह साफ टारगेट आपको बचत करने में मदद कर सकता है।

छोटे कदम से शुरूआत करें: लाइफ में हमेशा एक बड़ा फंड बनाने में सभी को टाइम लगता है। तो आप हर महीने अपनी इनकम का एक छोटा हिस्सा बचाना शुरू कर सकते हैं, भले ही यह छोटी राशि हो, नियमित रूप से बचत करने से यह समय के साथ एक बड़ा फंड बन जाएगा।

बचत को ऑटोमेट करें: आप हमेशा के लिए बचत को अपनी आदत बनाने के लिए, अपनी सैलरी अकाउंट से एक अलग बचत खाते में हर मंथ एक फिक्स अमाउंट का ऑटोमैटिक ट्रांसफर सेट कर दें। ऐसा करने से आपको सैलरी आते ही इमरजेंसी के लिए बचत हो जाएगी और आप इसे धुंधलें से बच जाएंगे।

कर्म कम करने को प्राथमिकता दें: तो अगर आप पर कोई हाई ब्याज वाला कर्ज (जैसे क्रेडिट कार्ड का कर्ज) है, तो सबसे पहले उसे चुकाने पर ध्यान देना चाहिए। हमेशा कर्ज से मुफ्त तरह से प्रो होने के बाद, आप अपने इमरजेंसी फंड के लिए अधिक बचत कर सकते हैं।

अलग और सुरक्षित जगह पर रखें: अपने इमरजेंसी फंड को अपने सामान्य बचत खाते से अलग रखें। इनको ऐसे ऑप्शन में इन्वेस्टमेंट करें जो सेफ हो और जिन्हें जरूरत पड़ने पर आसानी से निकाला भी जा सके।

कारोबार आइडिया

- अगर आप ऐसा बिजनेस चाहते हैं जिसकी मांग कभी कम न हो, तो आटे का बिजनेस करें
- भारत के कई हिस्सों में रोटी रोजमर्रा के भोजन का अहम हिस्सा, गुणवत्तापूर्ण आटे की डिमांड हमेशा रहती है व कमाई की संभावना लगातार

बिजनेस डेस्क

अगर आप भी नौकरी के अलावा बिजनेस करके खुद को स्टेबल कर मोटी कमाई करना चाहते हैं तो आपके लिए आटे का बिजनेस बेहतरीन विकल्प हो सकता है। इससे आप कम लागत में अच्छी कमाई का जुगाड़ लगा सकते हैं। रोटी भारतीय खानपान का अहम हिस्सा है, इसलिए इस बिजनेस की मांग हमेशा बनी रहती है। हर कोई चाहता है कि उसका बिजनेस लगातार चलता रहे और उसकी मांग कभी कम न हो। ऐसे में आटे का बिजनेस एक सुरक्षित और भरोसेमंद विकल्प बन सकता है। इसे शुरू करने के लिए लगभग 2.50 लाख रुपये तक का निवेश पर्याप्त है। भारत के उत्तर, मध्य और पूर्वी राज्यों में रोटी रोजाना के खानपान का जरूरी हिस्सा है, जिससे गेहूँ के आटे की खपत हमेशा बनी रहती है। यही कारण है कि इस कारोबार में मंदी आने की संभावना बेहद कम है। अगर आप सही मशीनरी, साफ-सुथरी प्रोसेसिंग और आकर्षक पैकिंग का इस्तेमाल करें, तो ये बिजनेस जल्दी ही स्थायी कमाई का जरिया बन सकता है। गुणवत्तापूर्ण आटे की हमेशा डिमांड रहती है और ग्राहक अच्छे ब्रांड को पसंद करते हैं। सही प्लानिंग के साथ आप कम लागत में इस बिजनेस की मजबूत शुरूआत कर सकते हैं और धीरे-धीरे इसे बड़े स्तर पर ले जा सकते हैं।

2.50 लाख में शुरू कर सकते हैं आटे का बिजनेस, हर महीने कर लेंगे मोटी कमाई

कहां से मिलेगा कच्चा माल
गेहूँ की उपलब्धता ग्रामीण इलाकों और उनके आसपास आसानी से हो जाती है। लोग हमेशा शुद्ध और गुणवत्तापूर्ण आटा पसंद करते हैं, जिससे इस कारोबार का बाजार लगातार मजबूत बना रहता है। गेहूँ के लिए किसानों से संपर्क करें। इसके बाद जैसे ही फसल आए किसानों से गेहूँ खरीद लें। फसल के मौके पर आपको सस्ता अनाज मिल सकता है। इसे एक कमरे में स्टोर कर लें। इसके बाद असानी से इसकी पिसाई कर बेचते रहें। गेहूँ को अच्छे से सुखाकर स्टोर करेंगे तो यह खराब नहीं होगा और रोटी भी बढ़िया आएगी। खेतों में गेहूँ की फसल होली के बाद आ जाती है। इसलिए आपको गेहूँ खरीदने के लिए मार्च में की प्रयास शुरू कर देना चाहिए। सोधे खेतों से बढ़िया क्वालिटी का गेहूँ खरीदें और आ बनाकर बेचते रहें। सबसे पहले गेहूँ की धुलाई और सुखाने की प्रक्रिया पूरी करें। इसके बाद सुखाए हुए गेहूँ को मशीन से पीसकर आटा तैयार करें। अंत में इसे आकर्षक पैकिंग में भरें, ताकि ग्राहक तुरंत आकर्षित हों और ब्रांड पर भरोसा करें।



शुरुआती लागत पर ध्यान
इस बिजनेस में मशीनरी के लिए लगभग 1.25 लाख रुपये की जरूरत होगी, जिसमें चक्की, रोस्टर, सीलिंग मशीन, वजन तराजू, गैस कनेक्शन और बर्तन शामिल हैं। बर्किंग कैपिटल के रूप में करीब 1 लाख रुपये लगेंगे, जिसमें कच्चा माल, वेतन, बिजली और गैस का खर्च शामिल होगा। इसके अलावा, बिल्डिंग पर 25,000 तक खर्च रुपये आ सकता है। इस तरह कुल निवेश 2.50 लाख रुपये के आसपास होगा।

हर महीने कितना मुनाफा

मौजूदा आंकड़ों के मुताबिक, इस बिजनेस से हर महीने करीब 1.15 लाख रुपये की बिक्री हो सकती है। वहीं, मासिक खर्च करीब 1.05 लाख रुपये तक रहेगा। यानी आपको हर महीने लगभग 10,000 रुपये या उससे ज्यादा का शुद्ध मुनाफा मिल सकता है, जो बिजनेस बढ़ने के साथ और बढ़ेगा।

हर महीने कितना मुनाफा
मौजूदा आंकड़ों के मुताबिक, इस बिजनेस से हर महीने करीब 1.15 लाख रुपये की बिक्री हो सकती है। वहीं, मासिक खर्च करीब 1.05 लाख रुपये तक रहेगा। यानी आपको हर महीने लगभग 10,000 रुपये या उससे ज्यादा का शुद्ध मुनाफा मिल सकता है, जो बिजनेस बढ़ने के साथ और बढ़ेगा।

हर महीने कितना मुनाफा
मौजूदा आंकड़ों के मुताबिक, इस बिजनेस से हर महीने करीब 1.15 लाख रुपये की बिक्री हो सकती है। वहीं, मासिक खर्च करीब 1.05 लाख रुपये तक रहेगा। यानी आपको हर महीने लगभग 10,000 रुपये या उससे ज्यादा का शुद्ध मुनाफा मिल सकता है, जो बिजनेस बढ़ने के साथ और बढ़ेगा।

वर्षों है आटे का बिजनेस फायदेमंद

रोटी भारतीय खानपान का अहम हिस्सा है, इसलिए इस बिजनेस की मांग हमेशा बनी रहती है। छोटे निवेश से भी इसकी शुरुआत की जा सकती है और क्वालिटी व पैकिंग पर ध्यान देकर इसे तेजी से बढ़ाया जा सकता है। सही मार्केटिंग के साथ आप इसे एक भरोसेमंद ब्रांड में बदल सकते हैं।

आटा बेचने के लिए विकल्प

- ▶ **भारत आटा बिक्री केंद्र:** सरकार द्वारा संचालित भारत आटा बिक्री केंद्रों पर आटा बेचा जा रहा है, जहाँ इसकी कीमत 27.50 रुपये प्रति किलोग्राम है। ये केंद्र देशभर में 800 मोबाइल वैन और 2,000 से अधिक दुकानों के माध्यम से आटा बेच रहे हैं।
- ▶ **मदर डेयरी के सफल स्टोर:** आप मदर डेयरी के सफल स्टोर से भी भारत ब्रांड का आटा खरीद सकते हैं।
- ▶ **नाफेड, एनसीसीएफ और केंद्रीय भंडार:** सरकार ने नाफेड, एनसीसीएफ और केंद्रीय भंडार के माध्यम से भारत आटा और चावल की खुदरा बिक्री शुरू की है।
- ▶ **स्थानीय बाजार:** आप अपने स्थानीय बाजार में भी आटा बेच सकते हैं या खरीद सकते हैं। कई स्थानीय बाजारों में आटे की दुकानें होती हैं जो ताजा और स्वादिष्ट आटा बेचती हैं।
- ▶ **आनलाइन प्लेटफॉर्म:** आप ऑनलाइन प्लेटफॉर्म का उपयोग करके भी आटा बेच सकते हैं या खरीद सकते हैं। कई ऑनलाइन स्टोर और वेबसाइटें आटे की बिक्री करती हैं।

अब नया इनकम टैक्स कानून देगा लाखों टैक्सपेयर्स को बड़ी राहत

जानकारी
बिजनेस डेस्क

सद ने इनकम टैक्स बिल 2025 का संशोधित रूप से पास करते समय ऐसी कई गलतियों या खामियों को ठीक कर दिया है, जो पुराने ड्राफ्ट में हो गई थीं। इन संशोधनों को पास किए जाने से देश के लाखों टैक्सपेयर्स को भारी राहत मिलेगी। केंद्र सरकार द्वारा किए गए इन बदलावों में निल टीडीएस सर्टिफिकेट, हाउस प्रॉपर्टी इनकम पर स्टैंडर्ड डिडक्शन, नॉन-एम्प्लॉइज के लिए पेंशन छूट और गुमाना दान के नियमों में सुधार जैसे कई अहम प्रावधान शामिल हैं। इस रिपोर्ट में हम आपको बताएंगे ऐसी कुछ बहम बदलाव जो टैक्सपेयर्स के ऊपर कई अच्छे असर डालेंगे। इससे आयकर रिटर्न भरना भी आसान हो जाएगा और कोई दिक्कत नहीं आएगी।

जीरो टीडीएस सर्टिफिकेट पर सुधारी गड़बड़ी

पुराने इनकम टैक्स एक्ट 1961 में धारा 197 के तहत निल यानी जीरो और लोअर टीडीएस सर्टिफिकेट दोनों का प्रावधान था, लेकिन नए बिल के शुरूआती ड्राफ्ट में निल शब्द हटा दिया गया था। इससे उन टैक्सपेयर्स के लिए परेशानी खड़ी हो सकती थी, जिनकी आय बेसिक छूट सीमा या सेक्शन 87ए रिबेट के बाद टैक्स फ्री होती है। संशोधित बिल में अब फिर से निल शब्द जोड़ दिया गया है, जिससे साफ हो गया है कि जरूरत पड़ने पर टैक्सपेयर्स निल टीडीएस सर्टिफिकेट ले सकते हैं। इससे अनावश्यक विवाद और रिफंड के झंझट से बचा जा सकेगा।

नॉन-एम्प्लॉइज को मिलेगी पेंशन टैक्स छूट

पहले ड्राफ्ट में कम्प्यूटेड पेंशन पर छूट सिर्फ कर्मचारियों को दी गई थी, जबकि मौजूदा कानून में यह सुविधा नॉन-एम्प्लॉइज को भी मिलती है, बशर्ते पेंशन अप्रूव्ड पेंशन फंड से आई हो। समिति ने इस असमानता को दूर करते हुए सिफारिश की कि नॉन-एम्प्लॉइज को भी यह छूट दी जाए। संशोधित बिल में यह बदलाव कर दिया गया है, जिससे अब सभी पात्र लोग, चाहे वे सैलरीड हों या न हों, पेंशन की पूरी राशि पर छूट पा सकेंगे।

हाउस प्रॉपर्टी इनकम पर स्टैंडर्ड डिडक्शन की स्पष्टता

नए बिल में साफ कर दिया गया है कि हाउस प्रॉपर्टी इनकम पर 30% का स्टैंडर्ड डिडक्शन म्यूनििसिपल टैक्स घटाने के बाद ही मिलेगा, जैसा कि मौजूदा कानून में है। इसके अलावा, पहले ड्राफ्ट में प्री-कंस्ट्रक्शन लोन इंटेरेस्ट डिडक्शन सिर्फ सेल्फ-ऑक्ज्यूपाइड प्रॉपर्टी के लिए था, जिससे किराए पर दी गई प्रॉपर्टी के मालिकों को नुकसान होता। संशोधित बिल में अब किराए पर दी गई या मानी हुई किराए पर दी गई प्रॉपर्टी के लिए भी यह डिडक्शन बहाल कर दिया गया है।

गोपनीय दान पर छूट के पुराने नियम बहाल

गैर-लाभकारी संगठनों के लिए पुराने कानून में कुल डोनेशन का 5% तक गुमाना या गुप्त दान टैक्स फ्री होता था। नए बिल के पहले ड्राफ्ट में इसे गुमाना दान का 5% कर दिया गया था, जिससे छूट का दायरा काफी घट जाता। समिति की सिफारिश के बाद संशोधित बिल में अब फिर से कुल डोनेशन का 5% वाला प्रावधान बहाल कर दिया गया है। इससे एनजीओ और चैरिटेबल ट्रस्ट पर टैक्स का बोझ नहीं बढ़ेगा।

संसद ने नए कानून को पास करते समय कई खामियों को ठीक किया

- पुराने ड्राफ्ट में कई खामियां सामने आई थी, लोगों को हो रही थी परेशानी
- निल टीडीएस सर्टिफिकेट, हाउस प्रॉपर्टी इनकम पर स्टैंडर्ड डिडक्शन बदले
- नॉन-एम्प्लॉइज के लिए पेंशन छूट और गुमाना दान के नियमों में भी सुधार किए

कर्मशैल्य प्रॉपर्टी पर नियम में सुधार

पहले ड्राफ्ट में सिर्फ ऑक्ज्यूपाइड कर्मशैल्य प्रॉपर्टी को हाउस प्रॉपर्टी इनकम के टैक्स से बाहर रखा गया था, जिससे खाली पड़ी बिजनेस प्रॉपर्टी पर भी नोशनल रेट लगाने का खतरा था। समिति ने सुझाव दिया कि मौजूदा कानून की तरह ऑक्ज्यूपाइड और वैकेंट दोनों तरह की कर्मशैल्य प्रॉपर्टी को बाहर रखा जाए। संशोधित बिल में यह सुधार कर दिया गया है, जिससे बिजनेस के लिए रखी गई लेकिन फिलहाल खाली पड़ी प्रॉपर्टीज पर अनावश्यक टैक्स का टेंशन टल गया है।

कर ढांचे में बदलाव

- नई कर व्यवस्था में छूट की सीमा को बढ़ाकर 12 लाख रुपये कर दिया गया है, जिससे 12 लाख रुपये तक की आय वाले व्यक्तियों को कोई कर नहीं देना होगा।
- 80एम कटौती को बहाल किया, जो कंपनियों को अंतर-कॉर्पोरेट लाभांश को कटौती के दावे की अनुमति देता है।

टीडीएस और टीसीएस में बदलाव

- टीडीएस की सीमा बढ़ा दी गई है, जैसे कि वरिष्ठ नागरिकों के लिए ब्याज आय पर टीडीएस की सीमा 50,000 रुपये से बढ़ाकर 1,00,000 रुपये कर दी गई है।
- टीसीएस की दरें बदली हैं, जैसे ओवरसीज रिमिटेंस स्कीम के तहत 7 लाख से लेनदेन पर टीसीएस की दर 0.5% से हटा दी है। अब 10 लाख से अधिक लेनदेन पर लागू होगी।

अन्य बदलाव

- धारा 206एबी और 206सीसीए को हटा दिया गया है, जिससे छोटे करदाताओं को राहत मिलेगी।
- यूनिफाइड पेंशन स्कीम (यूपीएस) के तहत कर लाभ बढ़ा दिए गए हैं।
- स्टार्टअप के लिए 100% कर छूट की अनुमति होगी जो 1 अप्रैल, 2030 से पहले स्थापित किए गए हैं।

नया इनकम टैक्स कानून, जिसे आयकर (नंबर 2) विधेयक, 2025 के रूप में जाना जाता है, लोकसभा द्वारा पारित किया गया है। यह विधेयक पुराने आयकर अधिनियम, 1961 की जगह लेगा और 1 अप्रैल, 2026 से लागू होगा।

खबर संक्षेप



सुमित कुमार ने संगमाला जिला मिवानी का कार्यभार

भिवानी। लघु सचिवालय भिवानी पहुंचने पर डीएसपी महेश कुमार डीएसपी अनूप कुमार, डीएसपी तोशाम श्री दिलीप कुमार व पुलिस अधीक्षक कार्यालय के शाखा इंचार्जों ने किया स्वागत। एच ए पी मधुबन से स्थानांतरित होकर आए सुमित कुमार आईपीएस ने आज शनिवार को जिला भिवानी में पुलिस अधीक्षक के पद पर कार्यभार संभाल लिया।

बीके स्कूल में जन्माष्टमी व स्वतंत्रता दिवस मनाया

भवानीखेड़ा। भवानी खेड़ा के बी.के. वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में जन्माष्टमी व स्वतंत्रता दिवस का पर्व धूम-धाम और हर्षोल्लास से मनाया गया। इस अवसर पर विद्यार्थियों द्वारा श्री कृष्ण से संबंधित झांकियों एवं उनके जीवन से जुड़ी मनमोहन लीलाओं का आयोजन किया गया। सबसे पहले भगवान श्री कृष्ण को माखन मिश्री का भोग लगाकर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। विद्यार्थियों द्वारा कृष्ण जन्म, यमुना पार, पूरना वध, माखन चोरी, कालिया नाग मर्दन, गोवर्धन धारण, रासलीला, कृष्ण सुदामा मिलन, श्री कृष्ण द्वारा माखन चुरा कर खाना आदि झांकियों पर प्रकाश डाला गया।

बीके कॉलेज ऑफ एजुकेशन में स्वतंत्रता दिवस मनाया

भवानीखेड़ा। बी.के. कॉलेज ऑफ एजुकेशन भवानी खेड़ा में 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस की 79वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में एक भव्य समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय में झंडा फहराया गया और देशभक्ति से ओतप्रोत सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसमें विद्यार्थियों और अध्यापकों में देशभक्ति की भावना को बढ़ावा दिया। समारोह के दौरान, विद्यार्थियों ने देशभक्ति गीत, नृत्य और अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

बीपीएस में अंतरविद्यालय कविता पाठ प्रतियोगिता

भिवानी। भिवानी पब्लिक स्कूल में विद्यालय संस्थापक स्वर्गीय देवराज पाहुजा की स्मृति में अंतरविद्यालय हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। कार्यक्रम में मुख्यतिथि गुलशन मलिक, नरेंद्र शर्मा, शशि शर्मा एवं मधु चुघ ने शिरकत की। कार्यक्रम की अध्यक्षता विद्यालय निदेशिका आशा पाहुजा ने की। प्रतियोगिता में 17 विद्यालय के विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। सभी प्रतिभागियों ने उत्कृष्ट विषयों पर महान कवियों द्वारा रचित सुंदर कविताओं को प्रस्तुत किया।

अध्यापिका के मर्डर के दोषियों को सख्त सजा हो

भिवानी। अखिल भारतीय जनवादी महिला समिति, भिवानी ने सिंधानी में कार्यरत दाणी लक्ष्मण की 19 वर्षीय अध्यापिका मर्डर के दोषियों को सख्त सजा देने, कॉलेज व लोहारू पुलिस की न्यायिक जांच, पीड़िता के परिवार को 50 लाख रुपए आर्थिक सहायता की मांग की है। यह प्रेस बयान जारी करते हुए जनवादी महिला समिति की जिला प्रधान बिमला घणघस जिला सचिव अनुराधा ने संयुक्त प्रेस बयान जारी करते हुए इस घटना पर गहरा शोक व्यक्त किया है और इसके लिए जिम्मेदार लोहारू पुलिस प्रशासन की लापरवाही को कड़े शब्दों में निंदा की है।

पूर्व प्रधानमंत्री स्व. अटल बिहारी को दी श्रद्धांजलि

भिवानी। शनिवार को बाग कोठी स्थित विधायक घनश्याम सर्राफ के आवास पर पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की पुण्यतिथि उनके चित्र पर पुष्प अर्पित करके मनाई गई। विधायक घनश्याम सर्राफ ने काह कि पूर्व प्रधानमंत्री स्व. अटल बिहारी वाजपेयी ने कई दूरदर्शी निर्णय लेकर एक मजबूत भारत की नींव रखी और साथ ही देश में सुशासन को मजबूत किया।

मनीषा हत्याकांड मामले: चौथे दिन भी ढिगावा में उमड़ा जनसैलाब

विपक्ष के नेताओं और संगठनों ने पुलिस की ढीली कार्यप्रणाली पर उठार सवाल



लोहारू। मनीषा हत्याकांड को लेकर आयोजित पंचायत में उपस्थित लोग।

मनीषा को इंसाफ दिलाने को सता और विपक्ष के कई नेता पहुंचे ढिगावा

हरिभूमि न्यूज ▶▶लोहारू

मनीषा हत्याकांड को चार दिन बीत गए और पुलिस के हाथ अब भी खाली हैं। बेटी मनीषा के लिए इंसाफ की मांग को लेकर ढिगावा में चौथे दिन भी धरना जारी रही।

धरने पर सता और विपक्ष के राजनीतिक दलों के अलावा किसान संगठनों, कर्मचारी व सामाजिक संगठनों के लोग पहुंच

लोग कड़ा फैसला लेने को होंगे मजबूर

पूर्व मंत्री जेपी दलाल ने कहा कि लोहारू जैसे शांतिप्रिय इलाके में इतना बड़ा वीरत्स कृत्य होना गंभीर चिंता का विषय है। पूरे हरियाणा में इस हत्याकांड की निंदा हो रही है। भाजपा महिला मोर्चा की प्रियदर्शिनी, पूर्व विधायक सुखविंद मांढी, इनलेनो व जेजेपी के जिला अध्यक्ष, भिवानी से कमल प्रधान, कामरेड ओमप्रकाश, पूर्व विधायक ओमप्रकाश बड़वा ने धरने का संबोधित करते हुए कहा कि बेटी को न्याय मिलना चाहिए। दोषियों की पहचान करके उन्हें शीघ्र गिरफ्तार किया जाए। विपक्ष के नेताओं और सामाजिक संगठनों के लोगों ने पुलिस की ढीली कार्यप्रणाली पर गहरो रोष प्रकट किया है। उन्होंने कहा कि यदि समय रहते पुलिस दोषियों को गिरफ्तार नहीं कर पाई तो धरने पर बैठे लोग कड़ा फैसला लेने को मजबूर होंगे। बता दें कि चार दिनों से चल रहे धरने के दौरान एडवोकेट अशोक आर्य, रवि आजाद आदि मौजूद रहे।

रहे हैं। चौथे दिन पूर्व कैबिनेट मंत्री जेपी दलाल, भाजपा महिला मोर्चा की प्रियदर्शिनी, पूर्व विधायक सुखविंद मांढी, इनलेनो व जेजेपी के जिला अध्यक्ष, भिवानी से कमल प्रधान, पूर्व विधायक ओमप्रकाश बड़वा सहित जोगी समाज के प्रदेश व विभिन्न जिलों के अध्यक्ष धरने पर पहुंचे मृतका मनीषा को इंसाफ दिलाने के लिए आवाज उठाई। इससे पहले बीते दिवस पूर्व विधायक की सोमवीर सिंह, कांग्रेस



तोशाम। तोशाम में कैडल मार्च निकालते हुए।

फोटो: हरिभूमि

युवाओं ने तोशाम में श्रद्धांजलि सभा कर निकाला कैडल मार्च

तोशाम। तोशाम के शहीद पार्क में दाणी लक्ष्मण की किंग्डी स्कूल अध्यापिका मनीषा की हत्या के विरोध में श्रद्धांजलि सभा कर करके में कैडल मार्च निकाला गया। इस दौरान मौजूद युवाओं में काफी रोष दिखाई दिया। कैडल मार्च में बड़ी संख्या में युवा और सामाजिक कार्यकर्ता शामिल हुए और अपने हाथों में कैडल लेकर नारेबाजी के साथ करके में कैडल मार्च निकाला तथा मृतका को श्रद्धांजलि दी। इस अवसर पर शहीद भगत सिंह क्लब तोशाम के प्रधान संदीप पंडाल, मातु पंडाल, अमित सोनी, सुशील बाल्मीकि, संजय पहलवान, हरदीप टाला, सोनू काटियाल, लाली वालिया, अजय बाल्मीकि, विकास नाफरिया, हिमाशु सोनी, रवि नाफरिया, शुभम शर्मा, मिनटू बागनवाला और जोगेन्द्र डाडम समेत अनेक युवा मौजूद रहे। इस दौरान मौजूद सभी युवाओं ने एक स्वर में कहा कि दोषियों को कड़ी से कड़ी सजा मिलनी चाहिए और भविष्य में ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकने के लिए प्रशासन को ठोस कदम उठाने होंगे।

विधायक राजबीर सिंह फरटिया, कांग्रेस के जिला प्रधान अनिरुद्ध चौधरी, भाजपा नेता वरुण व कैप्टन योगेश बैरागी, महाराज केशव नाथ सहित अनेक संगठनों

के लोग धरना स्थल पर पहुंचकर घटना की कड़े शब्दों में निंदा कर चुके हैं। पूर्व मंत्री जेपी दलाल ने कहा कि बहुत ही जघन्य अपराध हुआ है।

128 युवाओं ने किया रक्तदान

हंडबाल को बढ़ावा देने को कोच कुलजीत के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता : पवन

हरिभूमि न्यूज ▶▶मिवानी

स्वर्गीय कोच कुलजीत सिंह सिप्पा के जन्मदिवस पर उनकी याद एवं स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में गांव धनाना में तीसरे रक्तदान शिविर का आयोजन किया।

शिविर में मुख्यतिथि सहायक आबकारी व कराधान अधिकारी पवन घणघस, विशिष्ट अतिथि विरेंद्र जताई, संजय कमांडो व रविन्द्र पानू ने शिरकत की तथा शिविर शतकवीर रक्तदाता राजेश डुडेजा की देखरेख में किया। शिविर



भिवानी। शिविर में रक्तदान करते रक्तदाताओं को बैज लगाते अतिथि।

में 128 युवाओं ने रक्तदान किया। शिविर का शुभारंभ स्वर्गीय कोच कुलजीत सिंह सिप्पा की पत्नी संतोष ने उनके चित्र पर माल्यापण एवं द्वीप प्रज्वलित करके किया। इस दौरान उपस्थितजन ने देश की आजादी के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने वाले महान स्वतंत्रता सेनानियों व कोच

कुलजीत सिंह को श्रद्धांजलि अर्पित कर उन्हें नमन किया। शतकवीर रक्तदाता राजेश डुडेजा ने कहा कि रक्तदान करके हम किसी की जान बचाते हैं, वहीं दूसरी ओर आत्म संतुष्टि भी मिलती है। जाटू खाप 84 के अध्यक्ष कैप्टन भीमसिंह सिवाच व अन्य पदाधिकारियों को पगड़ी पहनाकर सम्मानित किया।

97 वर्षीय सरदार महिमा सिंह पंचतत्व में विलीन

सरदार महिमा सिंह अत्यंत नेक, शांत स्वभाव एवं धार्मिक व्यक्तित्व के धनी थे : सांसद

हरिभूमि न्यूज ▶▶मिवानी

भिवानी गुरुद्वारा प्रबंधक कमिटी के 97 वर्षीय प्रधान सरदार महिमा सिंह का शुक्रवार को निधन हो गया, उनका अंतिम संस्कार रामबाग शमशान घाट में बेटे सरदार तारासिंह ने सिख रहत मर्यादा के अनुसार किया। इससे पूर्व उनकी आत्मा की शांति के लिए गुरुवाणी साहब का पाठ एवं अरदास की गई।

बता दें कि सरदार महिमा सिंह पिछले 60 वर्षों से गुरुद्वारा प्रबंधक कमिटी के प्रधान पद पर आसीन रहे और उन्होंने धार्मिक एवं सामाजिक



भिवानी। सरदार महिमा सिंह को नमन करते सांसद धर्मवीर सिंह।

सेवा में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनके निधन से पूरे क्षेत्र में शोक की

लहर है। भिवानी-महेंद्रगढ़ लोकसभा क्षेत्र से सांसद धर्मवीर

इन्होंने दी श्रद्धांजलि

सांसद ने उनके योगदान को अमूल्य बताया। श्रद्धांजलि देने वालों में रामदेव तायल, एडवोकेट अजिताश सरदाना, धर्मवीर नेहरा वरिष्ठ पत्रकार अजय सेनी, पत्रकार सरदार कृष्णसिंह, बलविंद सिंह, बलदेव सिंह, प्रधान प्रेम मत्तरेजा, मुख्य वंशी सलमान सिंह, हानी प्रेमसिंह, बलदेव सिंह फोरमैन, कमलदीप सिंह, गुरशरण सिंह, दर्यासिंह, सोहनलाल मकड, दिलबाग निमडी, रमेश बंसल आदि शामिल रहे।

सिंह ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि सरदार महिमा सिंह अत्यंत नेक, शांत स्वभाव और धार्मिक व्यक्तित्व के धनी थे, उनका परिवार लंबे समय से उनसे जुड़ा रहा है।

28 को सौंपे जाएंगे ज्ञापन

रेशनेलाइजेशन के विरोध में छह सितंबर को सिंचाईमंत्री के आवास पर धरना-प्रदर्शन : अनिल बागड़ी

हरिभूमि न्यूज ▶▶मिवानी

हरियाणा गर्वमेंट पीडब्ल्यूडी मैकेनिकल वर्कर्स यूनियन संबंधित सर्व कर्मचारी संघ की शहरी ब्रांच पब्लिक हेल्थ, फील्ड ब्रांच पब्लिक हेल्थ, अधेशहरी ब्रांच पब्लिक हेल्थ की मीटिंग बडचौक स्थित यूनियन कार्यालय में हुई।

मीटिंग का संचालन प्राधान राजू चांगिया ने किया व अध्यक्षता ब्रांच प्रधान नरेंद्र शर्मा ने की। इस मौके पर मुख्य वक्ता के तौर पर सकस के जिला प्रधान सूरजभान जटासरा, यूनियन के जिला प्रधान अनिल बागड़ी, सचिव सोमवीर पालुवास, रामशरण खुंडिया, सुरशील



भिवानी। हरियाणा गर्वमेंट पीडब्ल्यूडी मैकेनिकल वर्कर्स यूनियन संबंधित सकस की बैठक को संबोधित करते वक्ता।

फोटो: हरिभूमि

आलमपुर मौजूद रहे। जिला प्रधान सूरजभान व अनिल ने कहा कि सरकार जो रेशनेलाइजेशन के नाम पदों को समाप्त कर रही है, इसे तुरंत प्रभाव से बंद किया जाना चाहिए। खुंडिया व चांगिया ने कहा कि सरकार ने कर्मचारियों के साथ जो भद्दा मजाक किया है, इसके विरोध में 28 अगस्त को पीडब्ल्यूडी के तीनों अधीक्षण अभियंतों को ज्ञापन सौंपे जाएंगे। 6 सितंबर को सिंचाई मंत्री श्रुति चौधरी के भिवानी

आवास पर धरना-प्रदर्शन किया जाएगा। ब्रांच प्रधान नरेंद्र शर्मा व स्टेट कमिटी से सुरशील आलमपुर ने कहा कि 13 सितंबर को पीडब्ल्यूडी बीएंडआर और पब्लिक हेल्थ मंत्री गंगवा के आवास पर प्रदर्शन होगा।

ये रहे मौजूद

इस अवसर पर ब्रांच सचिव प्रवीण कुमार, विजय शर्मा, रामनिवास, पवन, रमन, सुबे सिंह, अमित आदि मौजूद रहे।



भिवानी। श्री कृष्णजन्मोत्सव पर कार्यक्रम की प्रस्तुति देते बालक।

श्रीमती उत्तमी बाई स्कूल में स्वतंत्रता दिवस व श्री कृष्ण जन्मोत्सव मनाया

हरिभूमि न्यूज ▶▶मिवानी

नया बाजार स्थित श्रीमती उत्तमी बाई आर्य कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में स्वतंत्रता दिवस व श्री कृष्ण जन्माष्टमी धूमधाम से मनाई गई। दोनों ही कार्यक्रमों में छात्राओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

छात्राओं ने भाषण एवं कविताओं के माध्यम से देश को स्वतंत्र कराने वाले शहीदों को याद किया तथा हमारे जीवन में स्वतंत्रता का महत्व बताया। साथ ही श्री कृष्ण जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में विद्यालय की प्राचार्या व समस्त स्टाफ सदस्यों द्वारा लड्डू गोपाल को झुला झुलाया गया। भगवान श्री कृष्ण के जीवन पर आधारित सुंदर झांकियां प्रस्तुत की झांकियां में श्री कृष्ण जन्म, गोवर्धन धारण, गोपेश्वर

भगवान रासलीला व वर्तमान संदर्भ में आज कृष्ण मौल्य हैं। विषय पर सुंदर झांकियां प्रस्तुत की। छात्राओं ने राधा के नाम से जले, वो कृष्ण है आदि गीतों पर सुंदर नृत्य प्रस्तुत कर सबका मन मोह लिया। फैंसी ड्रेस में कृष्ण, राधा, वासुदेव, सुदामा, गोपी, ग्वाल आदि के चरित्र को प्रदर्शित करते हुए सुंदर अभिनय किया। मटकी सजाओ प्रतियोगिता में छात्राओं ने मक्खन से भरी सुंदर कलात्मक प्रतिक्रियां सजाईं। मटकी सजाओ प्रतियोगिता में कक्षा नौवीं की छात्रा दीपिका प्रथम स्थान पर रही। झांकी प्रतियोगिता में श्री कृष्ण जन्म पर आधारित झांकी प्रथम स्थान पर रही। आठवीं कक्षा की छात्रा हंसिका सर्वश्रेष्ठ कृष्ण व बारहवीं कक्षा की छात्रा निर्यति सर्वश्रेष्ठ राधा रही।

पंजाबी कम्युनिटी सेंटर में मुक्ति पर्व समागम का आयोजन

विकारों से मुक्ति प्राप्त करना ही सच्चा मोक्ष

परमात्मा की पहचान से आत्मा का सच्चा कल्याण संभव : पयाल

हरिभूमि न्यूज ▶▶मिवानी

सत्गुरु माता सुदीक्षा महाराज एवं निरंकारी राजपिता के पावन आशीर्वाद से पूरे भारत वर्ष में मुक्ति पर्व मनाया। इसी श्रृंखला में रामनगर कॉलोनी स्थित पंजाबी कम्युनिटी सेंटर में संत निरंकारी मिशन द्वारा मुक्ति पर्व समागम का भव्य आयोजन किया, जिसकी अध्यक्षता ऋषिकेश से पधारे विद्वान प्रचारक महात्मा धर्मेन्द्र



भिवानी। मुक्ति पर्व समागम में प्रस्तुति देती महिलाएं।

फोटो: हरिभूमि

पयाल ने की। कार्यक्रम में बाबा अवतार सिंह महाराज, जगत माता बुद्धवंती, निरंकारी राजमाता कुलवंत कौर व युग निर्माता माता सविन्द्र हरदेव के साथ-साथ उन सभी संतों को वक्ताओं ने अपने भजनों व विचारों के माध्यम से श्रद्धा से याद किया, जिन्होंने पूरा जीवन गुरु भक्ति व मानव सेवा में लगाया।

ब्रह्मज्ञान से समाप्त होती है नफरत

इस अवसर पर लघु कवि दरबार का आयोजन किया। समागम में भिवानी एवं चरखी दादरी जिलों के वागीण क्षेत्रों से बड़ी संख्या में निरंकारी श्रद्धालु तथा अन्य प्रभु प्रेमी सज्जनों ने श्रद्धा व उत्साह एवं भक्तिभाव से हिस्सा लिया। धर्मद पयाल ने फरमाया कि मानव जीवन का मुख्य लक्ष्य अपना आत्मा का कल्याण करना है, परमात्मा की पहचान से आत्मा का सच्चा कल्याण होता है। उन्होंने कहा कि जीवन की मुक्ति का अर्थ केवल शरीर का त्याग नहीं बल्कि जीवन में रहते हुए विकारों से मुक्ति प्राप्त करना है। यही सच्चा मोक्ष है। ब्रह्मज्ञान से नफरत समाप्त होकर प्रेम उत्पन्न होता है और सभी में परमात्मा के दर्शन होने लगते हैं, जिससे सभी अपने लगने लगते हैं। उन्होंने आगे कहा कि संत निरंकारी मिशन का मुख्य उद्देश्य मानव को मानव के करीब लाना है जो कि ब्रह्मज्ञान से ही संभव है। कार्यक्रम में हनुमान जोहड़ी धर्म के महंत चरणदास महाराज के साथ अनेक गणमान्य नागरिक एवं धार्मिक संस्थाओं के प्रतिनिधि भी मौजूद रहे। जोनल इंचार्ज बलदेवराज नागपाल ने मुख्यतिथि के साथ समस्त मानव परिवार का आभार जताया।

सार्वजनिक सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि जांगड़ा मल्टीस्पेशलिटी अस्पताल नजदीक नया बस स्टैंड, मिनी बाई पास, रोहतक रोड, भिवानी-127021 (हरियाणा) अपना मेडिकल रिकार्ड 2016 से लेकर 2020 तक को डिस्ट्राइ (खत्म) कर रहा है। यदि किसी मरीज को अपने मेडिकल रिकार्ड की जरूरत है तो वो अस्पताल (हॉस्पिटल) में आकर अपना रिकार्ड निकलवा ले। मेडिकल रिकार्ड निकलवाने को अवधि (समय) आज से 15 दिन तक रहेगी। इसके बाद अस्पताल (हॉस्पिटल) की कोई जिम्मेवारी नहीं रहेगी। फोन नं. 01664-297374, 9499161017

खबर संक्षेप



'19वीं ऑल इंडिया इंडिपेंडेंस कप कराटे चैम्पियनशिप के पदक विजेता अंश लांबा।

अंश लांबा ने इंडिपेंडेंस कप कराटे चैम्पियनशिप जीती

भिवानी। दिल्ली वर्ल्ड पब्लिक स्कूल, भिवानी की कक्षा 11 (नॉन-मैट्रिकल) के छात्र अंश लांबा ने तालकटोरा इंडोर स्टेडियम, नई दिल्ली में आयोजित '19वीं ऑल इंडिया इंडिपेंडेंस कप कराटे चैम्पियनशिप - 2025' में प्रथम स्थान (स्वर्ण पदक) प्राप्त किया है, जो न केवल विद्यालय अपितु सम्पूर्ण हरियाणा प्रांत के लिए भी अत्यधिक गौरव का विषय है।



स्वर्गीय भीष्म चंद्र की याद में पेयजल टंकी का उद्घाटन

बवानीखेड़ा। बवानीखेड़ा के बाई नंबर 15 यादवाण स्थित राजकीय मॉडल संस्कृत प्राथमिक स्कूल में शुक्रवार को स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पूर्व सैनिक स्वर्गीय भीष्म चंद्र की याद में लगभग 80 हजार की राशि से बनी चार हजार लीटर की पीने के पानी की एक विशाल टंकी का अनावरण किया गया। यह नैक कार्य पूर्व सैनिक की धर्मपत्नी सुशीला देवी द्वारा किया गया, जिन्होंने अपने पति की याद में इस पेयजल टंकी का निर्माण करवाया और इसे स्कूली बच्चों को समर्पित किया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में पहुंची सुशीला देवी ने परिवार के सदस्यों सहित पहुंच कर स्वयं टंकी का उद्घाटन किया। इस मौके पर कार्यक्रम में पहुंचे कस्बे के पूर्व सैनिक सुबेदार लीलू सिंह, लक्ष्मी चंद्र, जयपाल, सत्यनारायण, अशोक, सोमवीर ने बताया कि पूर्व सैनिक स्वर्गीय भीष्म चंद्र कस्बे के पंडित स्वर्गीय पुरुषोत्तम शर्मा के दामाद थे और उन्होंने अपना जीवन पति की सेवा में समर्पित कर दिया था।



श्री लाल बहादुर शास्त्री वमावि में मनाया स्वतंत्रता दिवस

बवानीखेड़ा। बवानी खेड़ा के श्री लाल बहादुर शास्त्री वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय ने स्वतंत्रता दिवस बड़े ही हर्षोल्लास और गरिमामय वातावरण में मनाया गया। इस अवसर पर विद्यालय परिसर को तिरंगे झंडों, रंग-बिरंगे फूलों और देशभक्ति से जुड़े संदेशों से सजाया गया। समारोह का में बतौर मुख्यअतिथि बवानी खेड़ा क्षेत्र के "कर्मठ" और "ईमानदार" व्यक्तित्व के धनी विद्यालय के पूर्व छात्र रहे वेदरमन सुबेदार अजी द्वारा दीप जलाने के युवा हुआ और विद्यालय से पट कर कामवाली के शिखर तक पहुंचने वाली पूर्व छात्रा उमा कौशिक द्वारा ध्वजारोहण करवाया गया। राष्ट्रगान की गूंज से पूरा वातावरण देशभक्ति के रंग में रंग गया। इसके बाद विद्यालय के छात्रों द्वारा स्वागत गीत और सरस्वती गान जैसी सुन्दर प्रस्तुती दी गयी, जिसने सभी का मन मोह लिया। कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने देशभक्ति गीत, नृत्य, कविताएँ और भाषण प्रस्तुत कर स्वतंत्रता संग्राम के वीर सपूतों को श्रद्धांजलि अर्पित की। कार्यक्रम के दौरान हरियाणवी देश भंगती गीत हरियाणा बदल गया और देश रंगीला रंगीला जैसे गीतों ने सभी देखने वालों को शिरकजे पर मजबूर कर दिया।

नन्हे कदमों से देशभक्ति की गूंज

भिवानी। ब्लूमिंग बडस सीनियर सेकेंडरी स्कूल में स्वतंत्रता दिवस विविध रंगारंग कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इस अवसर पर नर्सरी से लेकर 10वीं कक्षा तक के विद्यार्थियों ने देशभक्ति, कला और रचनात्मकता का शानदार प्रदर्शन किया। नर्सरी से यूकेजी तक के नन्हे-मुन्हे बच्चों ने अपने छोटे-छोटे हाथों से मनमोहक रंग-बिरंगे हैंडप्रिंट्स बनाकर सभी का मन जीत लिया। कक्षा 1 से 3 तक के बच्चों ने बैज मेंकिंग प्रतियोगिता में भाग लेकर अपनी कल्पनाशीलता और देशप्रेम की रंगों में पिरोया। कक्षा 4 से 10 तक के छात्रों ने देशभक्ति गीत और नृत्य प्रस्तुत कर वातावरण को भावनाओं और गर्व से भर दिया। उनकी प्रस्तुतियों ने सभी के दिलों में देशप्रेम की नई ऊर्जा का संचार किया। विद्यालय के डायरेक्टर एडवोकेट अजय गुप्ता एवं प्रधानाचार्य रेनु गुप्ता ने बच्चों को बधाई देते हुए कहा कि हमारे बच्चों की प्रतिभा और देशभक्ति की भावना वास्तव में प्रेरणादायक है।

सरस्वती विद्या विहार विद्यालय में स्वतंत्रता दिवस हर्षोल्लास से मनाया

भिवानी। आसलवास दुबिया स्थित सरस्वती विद्या विहार विद्यालय में स्वतंत्रता दिवस बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। प्रातःकालीन समय में विद्यालय परिसर तिरंगे की पवित्र आत्मा और देशभक्ति के गीतों से गूंज उठा। कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यालय के वेदरमन राजवीर सिंह द्वारा ध्वजारोहण एवं राष्ट्रगान के साथ हुआ। इस अवसर पर विद्यार्थियों ने स्वतंत्रता सेनानियों की याद में रोचक रोल प्ले प्रस्तुत किए, जिसमें महात्मा गांधी, भगत सिंह, रानी लक्ष्मीबाई, सुभाषचंद्र बोस आदि के जीवन और बलिदान को जीवंत रूप में दर्शाया गया। रोल प्ले में प्रथम स्थान स्पार्टन हाउस की लक्षिका, द्वितीय स्थान लैसर हाउस की शिखा तृतीय स्थान टाइटन हाउस के वीरेन ने प्राप्त किया। कार्यक्रम में देशभक्ति की भावनाओं से ओत-प्रोत कविताओं का भी आयोजन किया गया, जिसमें विद्यार्थियों ने अपनी मधुर वाणी से देशप्रेम का संदेश दिया। कविता में प्रथम स्थान स्पार्टन हाउस की 'देविका', द्वितीय व तृतीय स्थान हरकृष्ण हाउस की तवी और द्वितीय ने प्राप्त किया। कक्षा नर्सरी से 'हथ', एलकेजी से 'खुशी', यूकेजी से 'पिपल', पल्गनी से 'आरवी', दूसरी से 'धानी', तीसरी से 'नेहा', चौथी से 'नेना' और पांचवी से 'हर्षित व चिरान' ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

जुई खुर्द स्कूल में धूमधाम से मनाया स्वतंत्रता दिवस समारोह

भिवानी। गांव जुई खुर्द स्थित राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में स्वतंत्रता दिवस बड़े धूमधाम और हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस मौके पर मुख्य अतिथि के रूप में राजेंद्र शास्त्री व सुई सिंह फौजी ने ध्वजारोहण किया। विशिष्ट अतिथि के तौर पर संस्कृत प्रवक्ता सुनील शास्त्री पहुंचे। कार्यक्रम में मंच का संचालन आचार्य सुरेश शास्त्री ने किया। इस मौके पर प्राचार्य सीडी भारद्वाज ने अतिथियों का स्वागत किया। ध्वजारोहण के बाद मुख्य अतिथि राजेंद्र शास्त्री ने छात्रों और उपस्थित लोगों को संबोधित किया। उन्होंने भारत की आजादी में स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान को याद किया। उन्होंने कहा कि हमें उन वीरों को कभी नहीं भूलना चाहिए जिन्होंने अपना सब कुछ ब्योखार कर हमें यह आजादी दिलाई है। उन्होंने महात्मा गांधी, भगत सिंह, सुभाष चंद्र बोस और अन्य महान नेताओं के संघर्षों के बारे में बताया और कहा कि आज जो हम स्वतंत्र भारत में सांस ले रहे हैं, वह उन क्रांति क्रांति के लिए है जो हमें स्वतंत्रता दी है। इस अवसर पर विद्यालय की छात्राओं ने देशभक्ति से ओतप्रोत रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

बीके वमावि में मनाया स्वतंत्रता दिवस

बवानीखेड़ा। बीके वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में विद्यालय प्रबंधन समिति के निदेशक कृष्ण कुमार शर्मा द्वारा राष्ट्रगान की धुन पर ध्वजारोहण किया गया और राष्ट्रीय गान के साथ राष्ट्रीय ध्वज को सलामी दी। स्वतंत्रता दिवस का भव्य आयोजन पूरे देश भक्ति, उत्साह और गरिमामय वातावरण में मनाया गया। इस अवसर पर विद्यार्थियों द्वारा देशभक्ति गीत प्रस्तुत किए गए जो स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान और देशप्रेम की भावना को दर्शाते हैं। इस दौरान विद्यालय प्राचार्य ने विद्यार्थियों को इस महत्वपूर्ण दिवस के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि हम 75वां स्वतंत्रता दिवस मना रहे हैं। उन्होंने विद्यार्थियों से आह्वान किया कि वे देश की एकता, अखंडता एवं इसकी अखंडता को बनाए रखें और इसकी गौरवमयी परंपरा को साक्षी तिरंगे झंडे को अपनी सांसों से लहराते रहें। इस अवसर पर विद्यालय प्रबंधन समिति के सचिव योगेश शर्मा, विद्यालय प्राचार्य पंकज मिश्रा, विरिष्ठ विभागा संचालक योगेंद्र सिंह, कनिष्ठ विभागा संचालक मंजू मालिक, नागेंद्र, मनीष शंकर, हेमलता आशा, गीतिका, पापती, संध्या, चंदा, हरिओम, कश्मीर, विपिन आदि उपस्थित रहे।

रात को कैडल मार्च दिन में हुए बाजार बंद

आक्रोशित युवा उतरे सड़कों पर



लोहारू। बंद पड़ा लोहारू का बाजार।

मनीषा हत्याकांड में पुलिस के चार दिन बाद भी हाथ खाली होने के कारण लोगों का आक्रोश बढ़ता दिखाई दे रहा है। वहीं पुलिस की ढीली कार्यप्रणाली को लेकर लोगों को प्रशासन और पुलिस के प्रति रोष देखने को मिल रहा है। रात को लोहारू शहर और निकवटली गांव के युवाओं ने कैडल मार्च निकालकर घटना की निंदा की और नारेबाजी करके पुलिस प्रशासन को जमकर कोषा। वहीं शनिवार सुबह जन्माष्टमी का त्योहार होने के बावजूद सैकड़ों युवा लोहारू की सड़कों पर उतर आए और शहर का व्यापारी वर्ग में



लोहारू। बंद पड़ा लोहारू का बाजार।

बाजार बंद कर युवाओं के साथ खड़ा हो गया। हर किसी जहन में घटना को लेकर आक्रोश दिखाई दे रहा है। लोहारू समस्या समाधान के प्रदीप सेनी, जगदीश जायलवाल, डॉ. सुरेश भारद्वाज, संजय वर्मा, देवी सिंह सोनी, संजय खंडेलवाल, राजेश शेखावत, प्रेम प्रकाश सोनी, पार्षद रवि अग्रवाल, रवि बॉक्सर, पवन पीजी सहित अनेक लोग कैडल मार्च में शामिल हुए। कैडल मार्च के दौरान लोगों सरकार और



लोहारू। बंद पड़ा लोहारू का बाजार।

पुलिस प्रशासन के खिलाफ नारेबाजी की और कहा कि मनीषा हत्याकांड ने दिल्ली के निर्भया हत्याकांड की याद ताजा कर दी है। आखिर इस प्रकार के अपराधों पर कब अंकुश लगेगा। शनिवार सुबह शहर के सूरजगढ़ मार्ग पर दुकानदारों ने घटना का विरोध करते हुए एकजुट होकर बाजार बंद रखने का निर्णय ले लिया तथा बाद में देखते ही देखते पूरे शहर के बाजार बंद हो गए।

लोगों बोले, पुलिस समय रहते मामले में कार्रवाई करती तो आज मनीषा जिंदा होती

हत्यारोपियों की गिरफ्तारी की मांग को लेकर प्रदर्शन



हत्यारोपियों की गिरफ्तारी की मांग को लेकर प्रदर्शन करते हुए।

आठों मार्केट में एकत्रित हुए। जजया नेता दिनेश सिहाग सुरपुरा, नरेन्द्र गोकलपुरा, महावीर चहल सहित अन्य लोगों ने कहा कि मनीषा के शव को मिले चार दिन हो गए हैं, पर पुलिस के हाथ अभी खाली है। पुलिस शुरू से ही मामले में गंभीर नहीं है। लेकिन, पूरा क्षेत्र मनीषा बेटी

हत्यारोपियों की गिरफ्तारी की मांग को लेकर प्रदर्शन



हत्यारोपियों की गिरफ्तारी की मांग को लेकर प्रदर्शन करते हुए।

के साथ है। मनीषा बेटी को न्याय मिलकर रहेगा। प्रदर्शनकारी हाथों में मनीषा को न्याय दिलाने की मांग को लेकर लिखे स्लोगनों की पट्टियां लेकर लोगों ने जोरदार नारेबाजी की। लोगों ने प्रदेश सरकार और पुलिस प्रशासन के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। बड़ी संख्या में महिलाओं ने प्रदर्शन में भाग लिया और मनीषा के लिए न्याय की मांग की। लोगों ने बहल बाजार बंद करो, बंद करो की नारेबाजी कर मैन रोड के सभी प्रतिष्ठानों को बंद करवाया। बाद में प्रदर्शनकारी झुपा रोड, राजगढ़ रोड, पुरानी अनाज मंडी होती हुई मैन बाजार में आए गए। प्रदर्शनकारी लोगों ने मैन बाजार पर जाम लगाने की कोशिश की।



ना करें किसी से तुलना आप स्वयं हैं अनमोल



कई लोग हमेशा दूसरों से अपनी तुलना करते रहते हैं और खुद को कमतर आंकते हैं। ऐसे लोग न जीवन में बड़ी उपलब्धियां हासिल कर पाते हैं और न ही खुश-संतुष्ट रहते हैं। अगर आप भी ऐसा सोचते हैं तो आपको अपना नजरिया बदलना होगा। ऐसा कैसे कर सकते हैं, जानिए।

को प्राप्त और विकसित करके हम स्वयं को सुखी बना सकते हैं।

जीवन के अंग अच्छा-बुरा

हमारे व्यक्तित्व और जीवन में अच्छाई के साथ-साथ बुराई भी मौजूद होती है। किंतु हमें उन बुराइयों को पहचान कर उन पर विजय प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। जीवन को संवरने के लिए हमें मूर्तिकार की तरह काम करना पड़ता है, जो अपनी मूर्ति बनाने के लिए पत्थर को काटता है, अनुपयोगी या अतिरिक्त पत्थर को छांटकर, छीलकर, राइड कर, घिसकर उसे एक सुंदर आकार देता है। हम चाहे जितनी कितानें पढ़ लें और चाहे जितने ज्ञानी हो जाएं, लेकिन यह ज्ञान अगर हमारे जीवन में नहीं उतरता है, उसे प्रभावित, निर्देशित या निर्धारित नहीं करता है तो यह सब बेकार है।



अतीत जैसा है आज का दौर

तुलना चाहे जैसी भी क्यों ना हो, व्यर्थ और निरर्थक ही होती है। चाहे वह व्यक्ति के संबंध में हो या समय और परिस्थिति के संबंध में हो। कुछ लोगों को अक्सर यही सोचकर दुखी और परेशान होते देखा जा सकता है कि पुराना जमाना बहुत अच्छा था। उनका मानना रहता है कि उस समय के लोग और परिस्थितियां अच्छी थीं, तब चीजें सरती होती थीं, लोग मिलनसार और सहयोगी थे, लूटपाट, चोरी और डकैती नहीं होती थी। यह एक गलतफहमी है कि दुनिया कभी बहुत अच्छी थी। जिस समय के लिए आप यह सब सोचते हैं, उस समय के लोग भी यही सब सोचते थे कि उनसे पहले की दुनिया अच्छी होती थी। आप किसी भी युग का इतिहास या साहित्य पढ़ लीजिए, उस समय के अत्याचारी राजा महाराजा, बादशाह, सेठ साहूकारों के लूट और शोषण के किस्से, गरीबी का आलम और महंगाई की दास्तान पढ़ने को मिल जाएगी। लुटेरों, धोखेबाज, अपराधी, लालची मित्र, कंजूस मालिक और ईर्ष्यालु रिश्तेदार या पड़ोसी हर जमाने में रहे हैं। भगवान राम का जमाना हो या श्री कृष्ण का, हरिश्चंद्र का जमाना हो या मुगल बादशाह अकबर या फिर ब्रिटिश काल, हर युग में खलनायक हुए हैं। हमारा मन ही कुछ ऐसा है, जो हमेशा बीते हुए काल में या दूसरों में परफेक्शन और सुख ढूंढता है। दुनिया में हर समय मुट्ठी भर लोग ही बहुत अच्छे और मुट्ठी भर लोग ही बहुत बुरे हुए हैं। बाकी के लोग तो हमारी और आपकी तरह सामान्य इंसान रहे हैं। इन दुश्चिंतकों, उलझनों और बेचैनी से बचने का सिर्फ एक ही रास्ता है, तुलना न करके अपने मन-जीवन का ध्यान खुद रखना।

भावनाओं पर नियंत्रण जरूरी

कई बार आप अचानक इधर-उधर की बातों सोचकर, किसी की सफलता, समृद्धि या सुख को देखकर विचलित या दुखी हो जाते होंगे। स्वयं को कोसते हुए एक अनजान अपराधबोध से घिर जाते होंगे। ऐसी स्थिति से बचने के लिए अपनी भावनाओं पर बारीकी से नजर रखिए। आपकी विवेकशीलता ही इस भावनात्मक प्रभाव को रोक सकती है। यह क्षमता आपको स्वयं हासिल करनी होती है। जब आप दुखी करने वाली भावनाओं को पहचानना सीख लेते हैं तो खुश होने के



असर बढ़ने लगते हैं। आप तनाव और गुस्से में हों तो सोचिए कि इसकी मूल वजह क्या है? इसके पीछे कौन-सी चीज, व्यक्ति या स्थिति है? फिर यह विचार कीजिए कि वह क्या चीज है, जो आपको दूसरों से अलग बनाती है? यह ताकत आपको अनावश्यक गुस्से से बचाएगी और कोई वाजिब कारण है तो उसे दूर करने का मौका देगी।

करते रहें आत्मविश्लेषण

इस बात से ज्यादा फर्क नहीं पड़ना चाहिए कि लोग आपको कितने खिलाफ हैं या कितने लोग आपके समर्थन में हैं? आपको अपने आपको दृढ़ रखते हुए सही दिशा में कार्य करना होगा। आपको स्वयं से पूछना होगा कि मैं क्या हासिल करना चाहता हूँ और उसके लिए क्या कर रहा हूँ? जो कर रहा हूँ, उसमें क्या सुधार है, जिन्हें दूर करना है? बस फिर आपको सभी बाहरी चीतों से छुटकारा मिल जाएगा।



नेचर है पावरफुल मेंटल हीलर

यह सच है कि आज की आधुनिक जीवनशैली में लोग तकनीक के जाल में उलझकर, नेचर से दूर होते जा रहे हैं। इसी वजह से लोग मेंटल प्रॉब्लम्स की गिरफ्त में आ रहे हैं। इनसे मुक्ति पाने के लिए हमें नेचर के करीब जाना होगा।

लाइफस्टाइल बुधारा फातमा

आस-पास फैली हरियाली, नदी, समंदर, झरने न सिर्फ देखने में सुंदर लगते हैं बल्कि वे हमारे मन को हील करने में भी मददगार साबित होते हैं। आज दुनिया जिस सोशल मीडिया के जाल में फंसी जा रही है, उस वजह से हर दूसरा इंसान अकेलेपन से जूझ रहा है। यह कितनी बड़ी विडंबना है कि एक तरफ टेक्नोलॉजी हमें चांद तक पहुंचा रही है, दूसरी तरफ हमारे पास एक अदद कोई अपना नहीं, जिससे हम अपने मन की बात कह सकें। आभासी दुनिया में भले ही टेरों फ्रेंड्स हों लेकिन वास्तव में कोई ऐसा दोस्त नहीं मिलता, जिसे

को बेहतर बनाना है तो प्रकृति के करीब जाना बहुत जरूरी है। खासतौर पर वर्कलेस का स्ट्रेस युवाओं को डिप्रेशन की तरफ ले जा रहा है। यही वजह है कि आजकल बहुत से लोग अच्छी-खासी जाँब छोड़ कर किसी पहाड़ी या समंदर के किनारे वाली जगह शिफ्ट हो रहे हैं। वास्तव में नेचर में एक हीलिंग पावर होती है। इसलिए बेहतर मेंटल हेल्थ के लिए नेचर से कनेक्टेड रहना बहुत जरूरी है। नेचर हमें फ्रेश, एनर्जेटिक और मेंटली हेल्दी बनाती है।

मिलता है सुकून-शांति

जीवन की भाग-दौड़ में अगर कोई चीज हम से छिन गई है तो वो है हमारा सुकून। प्रकृति के पास जाकर थोड़ा समय बिताने से हमें खुद को जानने-समझने का मौका मिलता है। वरना मोबाइल, इंटरनेट और सोशल मीडिया के युग में हम खुद के अस्तित्व को भूलते जा रहे हैं। प्रकृति हमारा मन शांत करती है और हम जीवन को नए नजरिए से देख पाते हैं।

गार्डनिंग से मिलती है तनाव से मुक्ति

अगर आपके पास समय का अभाव है तो नेचर के करीब जाने की शुरुआत अपने घर के गार्डन से कीजिए। नए-नए फूलों वाले पौधे लगाइए। किचन के लिए कुछ हर्ब्स उगाइए। ये छोटी-छोटी आदतें हमें तनाव से बचाने में मदद करती हैं। भले ही ये शौकिया हों लेकिन इतनी देर आप प्रकृति से जुड़े रहेंगे, जो बिना किसी दवा और डॉक्टर के आपके स्ट्रेस को कम करेगा।

नेचर के करीब करें वर्कआउट

जिम जाकर ट्रेडमिल पर भागने से अच्छा है, वर्कआउट के लिए किसी खुले और पेड़-पौधों से घिरे जगह का चुनाव करें। कानों में हेडफोन लगा कर



दौड़ना भले ही फैशन हो लेकिन अगर आप रनिंग या जॉगिंग कर रहे हैं तो प्रकृति को सुनने का प्रयास कीजिए। ये हमें मानसिक रिलेक्सेशन देता है। आज हम सब जिस तरह के आक्रामक और अशांत मानसिकता के बमते जा रहे हैं, वहां सिर्फ प्रकृति के पास ही वो पावर है, जो हमें शांत-चित्त रख सकती है। *

कवर स्टोरी शिखर चंद जैन

कई लोग यह सोचकर हमेशा परेशान और दुखी रहते हैं कि वे दुनिया से पिछड़ गए। ऐसा अक्सर वही लोग करते हैं, जिन्हें यह आभास नहीं कि हम ईश्वर की अनमोल कृति हैं। प्रकृति ने हमें अतुलनीय गुण दिए हैं। दुनिया का कोई भी सजीव दूसरे सजीव से हबहू मेल नहीं खा सकता।

तुलना है निरर्थक

इस बात को समझ लेना जरूरी है कि आप इस ब्रह्मांड में अपने जैसे अकेले ही हैं। इसलिए दूसरों से तुलना करना या उनके जैसा बनने की कोशिश करना व्यर्थ की मशक्कत है। इसमें अपना समय, श्रम, धन और ऊर्जा का अपव्यय करने की बजाय स्वयं को निरंतर निखारने के जतन करें। आम का स्वाद या आकार केले जैसा हो या अमरूद का स्वाद संतरे जैसा हो तो क्या आप इसे कभी सच्चे मन से स्वीकार कर पाएंगे? आप करले को उसकी कड़वाहट के साथ उसके गुणों के कारण ही तो स्वीकार करते हैं।

एक तरह का क्रम है परफेक्शन

परफेक्शन यानी संपूर्णता एक ऐसी भावना है, जो हमें निरंतर परेशान करती है। लेकिन इसे कभी प्राप्त नहीं किया जा सकता, क्योंकि जिस पल आप स्वयं को किसी भी मायने में पूर्ण करते हैं, वह अगले ही पल बदली हुई परिस्थितियों और समय के कारण अपूर्ण या पुरानतन हो जाता है। संसार में बुराई, दुख और अपूर्णता अपरिहार्य हैं। दुख ऐसी भावना है, जो हर व्यक्ति के जीवन में किसी न किसी रूप में अनुभव होती ही है। अपूर्णता जीवन की मूलभूत सच्चाई है, जो हमें सिखाती है कि कुछ भी पूर्ण नहीं होता। बुराई और कमियां इस संसार में अंतर्निहित हैं। लेकिन धार्मिकता, पवित्रता और सरलता जैसे गुणों को विकसित करके उच्च अवस्था प्राप्त की जा सकती है। इस प्रक्रिया में अच्छे गुणों



कविता विक्रम सिंह

मछलियां और हम

मछलियां जमीं पर नहीं लेती सांस और हम, नम के नीचे घुटने को अभिशाप हैं। जंगलों की लाश पर उठते हैं हमारे मरुत, रर ईट में कैद है, एक सूखी सांस। एक वक्त आएगा... जब हवाएं भी पराई लेंगी, और हम मछलियों की तरह, अपनी ही धरती पर मुरझा जाएंगे।

खंग्य / यशोधरा भटनागर

साफ-सफाई के दौरान कुछ पुराने बर्तनों में पीतल का लोटा हाथ आ गया। मैंने उसे नीचे रखा तो यहाँ-वहाँ लुढ़कने लगा। उसे तो अपनी बनावट के कारण लुढ़कने ही था, लेकिन हमें हिंदी की कक्षा में पढ़ाया गया मुहावरा जरूर याद दिला गया, 'बिन पेंदी का लोटा'।
याद आया स्कूल में तो यह भी दूसरे मुहावरे जैसे ही रट लिया था जैसे 'गले का हार होना' या 'चिकना घड़ा होना', परंतु आज हमारे अंदर बैठे लेखक नामक जीव ने गुढ़ाधर्म में गोते लगाने के लिए मजबूर कर दिया।
डुबकियां लगाते-लगाते ज्ञान प्राप्त हुआ कि आज के समय में बिन पेंदे का लोटा कोई मुहावरा नहीं, बल्कि खरपतवार की तरह फलती-फूलती एक प्रजाति है, जो राजनीति में, टीवी डिबेट में, व्हाट्सएप यूनिवर्सिटी में और मोहल्ले की चौपाल से लेकर सोशल मीडिया की टाइमलाइन तक हर जगह मौजूद है।
पहले यह गुण नेताओं ने अपनाया। कहा जाता 'वो नेता बिन पेंदे का लोटा है, कब किस दल में चला जाए, कहा नहीं जा सकता।'
गौर कीजिए एक नेता का वार्तालाप- 'मैं नैतिकता के आधार पर पार्टी छोड़ रहा हूँ।'
'क्यों नेता जी?'
'इस पार्टी में नैतिकता बची ही कहाँ है भैया, इसीलिए।'
'तो किस पार्टी में जाओगे?'
'जहाँ मंत्री पद मिलेगा, वहाँ नैतिकता भी मिल जाएगी।'
नेता अगर पत्ता भी तोड़ता है, तो पहले हवा का रुख देखता है। गिरेगा तो उसी दिशा में, जहाँ टूटिंग हो। कल तक जो पार्टी उनकी निगाहों में 'गुलाम मानसिकता' की थी, आज वहाँ जाकर बोलते हैं, 'मैं राष्ट्रसेवा के लिए आया हूँ।'
आजकल नैतिकता के जी.पी.एस. विहीन लोटों की कमी नहीं है। अब ये लोटे केवल राजनीति में ही नहीं, सोशल मीडिया पर भी हैं। ये लोटे अब केवल पानी नहीं ढोते, ये व्यूज, लाइक्स और ब्रांड डीलस भी ढोते हैं। ये बिन पेंदी के लोटे डूबते-उतरते रीलों की लहर पर खूब बह रहे हैं।
एक गुरुजी ने पहले कहा, 'हम नई पीढ़ी को आलोचनात्मक चिंतन सिखाएंगे।'

आज के युग में बिन पेंदे का लोटा होना कोई दोष नहीं, बल्कि गुण बन गया है। स्थिर रहो तो मूर्ख कहे जाते हो, पलट जाओ तो चतुर और बार-बार पलटो तो स्मार्ट। अब विचार नहीं बदलते, सिर्फ हैशटैग बदलते हैं। 'बिन पेंदी का लोटा' होना अब रणनीति है।

लुढ़कते लोटे



पेंदे का लोटा नहीं होना चाहिए। बर्तन बड़ा या छोटा हो पर पेंदे वाला हो। लेकिन आजकल हर कोई सोचता है, 'अगर लोटा बनेंगे, तो बहाव वहीं है, जहाँ पावर है।'
अगर महाभारत आज लिखा जाता, तो शकुनि अपने भांजे दुर्योधन से कहता, 'मैं पांडवों का स्थायी दुश्मन नहीं हूँ, राजनीतिक परिस्थितियां बदल रही हैं। फिलहाल सोशल मीडिया पर पांचों पांडव ज्यादा ट्रेंड कर रहे हैं, तो मैं भी उनकी तरफ चला जाता हूँ।'
आज के युग में बिन पेंदे का लोटा होना कोई दोष नहीं, बल्कि गुण बन गया है। स्थिर रहो तो मूर्ख कहे जाते हो, पलट जाओ तो चतुर और बार-बार पलटो तो स्मार्ट। अब विचार नहीं बदलते, सिर्फ हैशटैग बदलते हैं।
'बिन पेंदी का लोटा' होना अब रणनीति है। सिर्फ एक चीज स्थिर है और वो है अस्थिरता! *

जब बच्चे सरकार से सवाल करने लगे तो गुरु जी बोले, 'नालायक बन गए हैं, संस्कृति खत्म कर दी।'
अब वही गुरुजी पेड़ वेबिनार में 'नेशनलिज्म और योग' पढ़ा रहे हैं, क्योंकि वही ट्रेंडिंग है। इन्हीं के चलते नैतिकता अब कूपन कोड बन गई है, मौके पर डालो, डिस्काउंट मिल जाएगा।

जब हम मीडिया के लोटे का पेंदा ढूंढ़ने लगे तो ढूंढ़ते रह गए। पहले कहते थे 'हम सत्ता की आंख में आंख डाल कर सच बोलेंगे।' अब सच को आंख-मिचौली का खेल बना दिया है।
आम जनता विलाप करती है, 'महंगाई हमें रुला रही है।'
रिपोर्टर पूछती है, 'लेकिन एक्ट्रेस की ड्रेस पर आपका क्या कहना है?'
'बेरोजगार युवा कहते हैं, 'हमें नौकरी चाहिए।'
रिपोर्टर कहती है, 'एक बाबा ने जल में से निकाली सोने की मछली।'
गरीब गिड़गिड़ाता है, 'हमें राशन चाहिए साहब।'
रिपोर्टर उत्साहित होकर बताती है, 'देखिए, मंत्री जी की पोती ने गाया ऐसा मार्मिक देशभक्ति गीत, देश हुआ गौरवान्वित।'
महिला घबराकर कहती है, 'सड़क पर रोशनी नहीं है, डर लगता है।'
रिपोर्टर कहती है, 'देखिए, किस सेलिब्रिटी ने खरीदी तीन करोड़ की कार!'
एक समय था, जब कहा जाता था 'व्यक्ति को बिना पेंदे का लोटा नहीं होना चाहिए। बर्तन बड़ा या छोटा हो पर पेंदे वाला हो। लेकिन आजकल हर कोई सोचता है, 'अगर लोटा बनेंगे, तो बहाव वहीं है, जहाँ पावर है।'
अगर महाभारत आज लिखा जाता, तो शकुनि अपने भांजे दुर्योधन से कहता, 'मैं पांडवों का स्थायी दुश्मन नहीं हूँ, राजनीतिक परिस्थितियां बदल रही हैं। फिलहाल सोशल मीडिया पर पांचों पांडव ज्यादा ट्रेंड कर रहे हैं, तो मैं भी उनकी तरफ चला जाता हूँ।'
आज के युग में बिन पेंदे का लोटा होना कोई दोष नहीं, बल्कि गुण बन गया है। स्थिर रहो तो मूर्ख कहे जाते हो, पलट जाओ तो चतुर और बार-बार पलटो तो स्मार्ट। अब विचार नहीं बदलते, सिर्फ हैशटैग बदलते हैं।
'बिन पेंदी का लोटा' होना अब रणनीति है। सिर्फ एक चीज स्थिर है और वो है अस्थिरता! *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

उद्भ्रांत का बहुविध रचनाकर्म

करीब डेढ़ सौ पुस्तकों के रचनाकार उद्भ्रांत का रचना संसार बहुत विस्तृत है। उनके रचनाकर्म के विभिन्न आयामों पर अनेक आलोचकों के द्वारा लिखे गए लेखों की पुस्तक 'उद्भ्रांत का रचनाकर्म' कुछ समय पूर्व कैलाश बाजपेयी के संपादन में प्रकाशित होकर आई है। इसके पहले खंड में 19 आलोचनात्मक लेख हैं, जबकि दूसरे खंड में हरभजन सिंह मेहरोत्रा द्वारा उद्भ्रांत पर लिखा गया संस्मरण और शहंशाह आलम द्वारा लिया गया उद्भ्रांत का साक्षात्कार भी संकलित है। उद्भ्रांत की प्रसिद्ध रचना 'रुद्रावतार' पर डॉक्टर आनंद सिंह लिखते हैं, 'उद्भ्रांत की विशेषता यह मानी जानी चाहिए कि उन्होंने आधुनिक कविता के गद्याभासी समकालीन समय में मिथकाभासी छंदस कविता रचकर संश्लिष्ट सर्जनाशक्ति का परिचय दिया है, जो आजकल विलुप्त हो गई प्रवृत्ति है।'
शहंशाह आलम के द्वारा पूछे गए एक सवाल पर उद्भ्रांत का यह कथन उनकी लेखकीय प्रतिबद्धता को प्रकट करता है, 'हर कवि अपनी कविता का मुहावरा स्वयं खोजता है।' कह सकते हैं कि यह किताब उद्भ्रांत के रचनाकर्म को समझने का रास्ता मुहैया कराती है। *

पुस्तक: उद्भ्रांत का रचनाकर्म (आलोचना), संपादक: कैलाश बाजपेयी, मूल्य: 245 रुपए, प्रकाशक: नमन प्रकाशन, नई दिल्ली



सांस्कृतिक उत्सव / धीरज बसाक

भारत के उत्तर-पूर्वी राज्य मिजोरम में हर्षोल्लास से मनाया जाने वाला मिम कुट उत्सव, यहां की आत्मा में बसा पर्व है। यह पर्व मिजोरमवासियों को पूर्वजों की स्मृति के उल्लास से सामूहिक रूप में जोड़ता है। इस उत्सव में वे न केवल प्रकृति के प्रति आभार व्यक्त करते हैं बल्कि अपनी सामाजिक चेतना, सांस्कृतिक गरिमा और मानवीय संबंधों की जीवंतता का भी उल्लास मनाते हैं। यह पर्व हमें संदेश देता है कि जब पूरा समाज मिलकर पूर्वजों की याद में हंसता, गाता है, तो ऐसा समाज अतीत को उत्सव के रूप में मनाता है।

सांस्कृतिक आत्मा में बसा उत्सव: वास्तव में भारत के पूर्वी राज्य मिजोरम की सांस्कृतिक आत्मा में यहां का मिम कुट उत्सव रचा-बसा है। मिम कुट उत्सव कहने को तो एक फसल पर्व है, लेकिन इसमें जीवन के उल्लासपूर्ण दर्शन का पूरा आख्यान छिपा है। वास्तव में मिजो भाषा में मिम का मतलब होता है मकई यानी मक्का और कुट का मतलब होता है त्योहार, यानी मिम कुट उत्सव प्रत्यक्ष रूप में मकई की बेहतरीन फसल को उत्सव है। यह उत्सव मकई की भरपूर फसल होने के खुशी में मनाया जाता है। लेकिन मकई तो कृषि जीवन का एक प्रतीक भर है। यह वास्तव में परिवार के पूर्वजों की स्मृति का उत्सव और स्मृति के शोक को उल्लास में बदलने का ढंग है।

उल्लास से करते हैं पूर्वजों को याद : मिम कुट उत्सव में परिवार के उन सभी बुजुर्गों/पूर्वजों को याद किया जाता है, जिनका उस साल या अतीत में निधन हुआ है। लेकिन यह दिवंगत बुजुर्गों को शोक संतप्त ढंग से याद करने का उत्सव नहीं है बल्कि ढोल की धाम में पूर्वजों की स्मृति को साझा करने का पर्व है। यह पर्व बहुत ही आनंद और उत्साह के साथ मनाया जाता है।

कैसे मनाया जाता है उत्सव: यह पर्व पारंपरिक लेकिन उत्साहपूर्ण ढंग से मनाया जाता है, जिसमें पहले पक चुकी मक्का की बालियों को भूनकर गांव भर के पूर्वजों और देवी देवताओं की आत्माओं को समर्पित किया जाता है। इसके बाद गांव भर के लोग सामूहिक रूप से एकत्रित होते हैं। परंपरागत वेशभूषा में पुरुष और महिलाएं मिलकर चराओ नृत्य करते हैं। यह नृत्य स्थानीय ढोल, गींग और बांगुरी के साझा संगीत में संपन्न होते हैं। इस समारोह में पारंपरिक भोज और पेय की विशेष व्यवस्था होती है। खास करके 'जू' नाम की चावल से बना एक विशेष पारंपरिक पेय, इस भोज और उत्सव की खास पहचान होती है। यह पेय पुरे गांव के लोगों के बीच सामूहिक रूप से बांटा जाता है। इस पेय के साथ खाए जाने वाले तरह-तरह के पकवान भी पुरे गांव के लोग मिलकर बनाते हैं या इनकी व्यवस्था करते हैं।

बहुत अनोखा-सांस्कृतिक पर्व मिजोरम का मिम कुट उत्सव

भारत के उत्तरपूर्वी राज्य मिजोरम में मनाया जाने वाला मिम कुट उत्सव जैसे तो फसल कटाई का उत्सव है, लेकिन इस उत्सव में लोग अपने समुदाय के दिवंगत हुए लोगों को भी याद करते हैं। अनोखे और उल्लासपूर्ण ढंग से मनाए जाने वाले मिम कुट उत्सव के बारे में जानिए।



इस बार कब मनाया जाएगा उत्सव

मिम कुट उत्सव हर साल अगस्त माह के अंत या सितंबर के पहले सप्ताह में मनाया जाता है। स्थानीय आनंदताओं के मुताबिक इस साल 1 से 3 सितंबर 2025 के बीच यह उत्सव मनाया जाएगा। गौरतलब है कि मिजोरम में स्थानीय चंद्र पंचांग का चलन है, जो कि फसल की स्थिति और सामूहिक उत्सव पर निर्भर होता है। इसलिए अंग्रेजी कैलेंडर की तारीखों से यह आगे पीछे भी हो सकता है।

जब पूरे गांव के सभी बड़े, बुजुर्ग और बच्चे खाने-पीने और संगीत की मस्ती में डूब रहे होते हैं, तब युवा लोग अपनी तीरंदाजी और दूसरे खेल कौशल, कुश्ती का प्रदर्शन करते हैं। **सामूहिकता में सामाजिकता की झलक:** मिम कुट उत्सव की सबसे बड़ी विशेषता इसकी सामूहिकता है। इसमें किसी जाति, वर्ग, उम्र, लिंग के लोगों का कोई भेद नहीं रहता। सब लोग एक साथ मिलकर यह उत्सव मनाते हैं। इससे सामूहिकता मजबूत होती है और सामाजिकता को भरपूर सम्मान मिलता है। इस उत्सव में जो भी लोग अपने-अपने घरों से लाते हैं, वह सामूहिक रूप से एक जगह इकट्ठा कर लिया जाता है। फिर इन तमाम चीजों का लोग मिलकर भरपूर आनंद लेते हैं। कोई नहीं जानता कि वह किसकी क्या चीज का आनंद ले रहा है। इसके

साथ ही गांव के सभी लोग मिल कर नृत्य करते हैं। मिलकर भोजन तैयार करते हैं और मिलकर इस सबका आनंद लेते हैं।

पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र: मिजोरम का मिम कुट उत्सव केवल एक पारंपरिक पर्व भर नहीं है बल्कि यह एक ऐसा सांस्कृतिक उत्सव बन चुका है, जो पर्यटकों और संस्कृति प्रेमियों को खूब आकर्षित करता है। देश-विदेश से आए पर्यटक मिजो संस्कृति, खान-पान, वेशभूषा और पारंपरिक जीवनशैली से परिचित होते हैं। इस पर्व के दौरान पर्यटकों के पास स्थानीय लोगों की हस्तशिल्प और दस्तकारी की कई अद्भुत चीजों को नजदीक से देखने और खरीदने का मौका मिलता है। पर्यटक स्थानीय लोगों के साथ मिलकर उनकी ही जैसी पोशाक पहनकर, उनके ही जैसे लोकनृत्य करने की कोशिश करते हैं और इसका भरपूर आनंद लेते हैं। इस उत्सव में भाग लेने से पर्यटकों को प्रामाणिक जनजातीय अनुभव होते हैं। मिजोरम टूरिज्म विभाग अब इस उत्सव को अपने अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन कैलेंडर में भी प्रमोट कर रहा है।

ग्लोबलाइजेशन के दौर में मिम कुट महोत्सव: ग्लोबलाइजेशन के इस दौर में दुनियाभर की संस्कृतियां एक-दूसरे से मेलजोल कर रही हैं, एक-दूसरे को जान-पहचान रही हैं। ऐसे समय में मिजो संस्कृति अपनी उदारता और खुलेपन के कारण दुनिया भर को आकर्षित कर रही है। मिम कुट उत्सव बताता है कि अगर आपके अंदर अपनी संस्कृति, अपनी पहचान धुंझकती है, तो वैश्वीकरण की धुंध आपको प्रभावित नहीं कर सकती। आपकी अपनी चमक और धमक दोनों ही बनी रहती हैं। मिम कुट उत्सव जैसे पर्व इस वैश्विक समाज में अपनी शानदार सांस्कृतिक सहभागिता का उत्कृष्ट उदाहरण है। मिम कुट उत्सव जहां एक ओर स्थानीय मिजोवासियों को दुनिया के साथ मेल-जोल बढ़ाने का मौका देता है, वहीं दूसरी ओर यह उत्सव दुनिया के लिए मिजो संस्कृति की खिड़की खोलता है। *

पहली जॉब के लिए जरूरी हैं ये तैयारियां

अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद हर यंगस्टर अच्छी जॉब चाहता है, ताकि उसका करियर ब्राइट बन सके। लेकिन इसके लिए आपको कुछ तैयारियां जरूर करनी चाहिए और खुद में कुछ स्किल्स भी डेवलप करनी चाहिए। इनके बारे में जानिए।

सेल्फ इंप्रूवमेंट

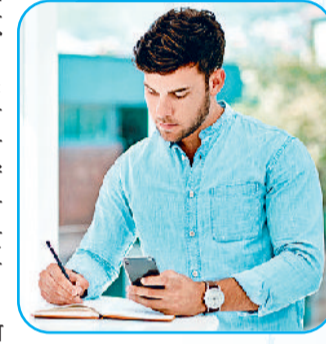
शिखर चंद जैन

पहली जॉब शुरू करना किसी भी युवा के लिए एक यादगार और महत्वपूर्ण कदम होता है। यह न केवल एक नई जिम्मेदारी का प्रतीक है, बल्कि यह एक ऐसा अवसर भी है, जिसका सही उपयोग करके आप पेशेवर दुनिया में अपनी पहचान बना सकते हैं और आगे चलकर अपने करियर को नई ऊंचाइयों तक ले जा सकते हैं। लेकिन इस क्षेत्र में सफलता पाने के लिए कुछ आदतों और तैयारियों की आवश्यकता होती है। इन तैयारियों और आदतों को अपनाकर आप न केवल जल्दी और अच्छा जॉब पा सकते हैं, बल्कि अपने करियर की मजबूत शुरुआत भी कर सकते हैं।

प्रोफेशनल रिज्यूमे-कवर लेटर: एक संक्षिप्त, आकर्षक और जॉब के लिए अनुकूलित रिज्यूमे बनाएं। अपनी उपलब्धियों को हाइलाइट करें। प्रत्येक जॉब आवेदन के लिए कवर लेटर को कस्टमाइज करें, जिसमें कंपनी और रोल के प्रति आपका उत्साह दिखे। रिज्यूमे में ऐसे कीवर्ड्स का उपयोग करें जो जॉब डिस्क्रिप्शन से मेल खाते हैं। इंटरव्यू की समुचित तैयारी करें। सामान्य इंटरव्यू सवालों की प्रैक्टिस करें। कंपनी और जॉब रोल के बारे में रिसर्च करें। मॉक इंटरव्यू के लिए दोस्तों या मेंटर्स की मदद लें।

अनुशासन-समय प्रबंधन: कॉरपोरेट जगत में समय का सही प्रबंधन सबसे महत्वपूर्ण है। समय पर काम पूरा करना, मीटिंग्स में समय पर पहुंचना और डेडलाइंस का पालन करना आपके पेशेवर दृष्टिकोण को दर्शाता है। पहली जॉब में प्रवेश करने से पहले, अपनी दिनचर्या को व्यवस्थित करें। एक डायरी या डिजिटल टूल जैसे गूगल कैलेंडर का उपयोग करें, ताकि आप अपने कार्यों को प्राथमिकता दे सकें। एक रूटीन बनाएं, जिसमें जॉब सर्च, स्किल डेवलपमेंट और नेटवर्किंग के लिए समय हो। हर हफ्ते 10-15 जॉब एप्लीकेशंस भेजने का लक्ष्य रखें। सुबह जल्दी उठने की आदत डालें, ताकि आप दिन की शुरुआत तरोताजा और ऊर्जावान तरीके से कर सकें। समय प्रबंधन की यह आदत न केवल आपके काम की गुणवत्ता को बढ़ाएगी, बल्कि आपके सहकर्मियों और बॉस पर भी सकारात्मक प्रभाव डालेगी।

संवाद कौशल: कॉरपोरेट सेक्टर में प्रभावशाली संवाद एक अनिवार्य गुण है। चाहे वह ई-मेल लिखना हो, मीटिंग में अपनी बात रखना हो या सहकर्मियों के साथ विचार-विमर्श करना हो, स्पष्ट और संक्षिप्त बातचीत आपके विचारों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करता है। पहली जॉब के लिए, अपने लिखित और मौखिक कम्युनिकेशन को निखारें। औपचारिक ई-मेल लिखने का अभ्यास करें, अपनी बात को आत्मविश्वास के साथ कहने की कला सीखें और सक्रिय श्रोता बनें। यदि आपको अंग्रेजी या अन्य संवाद भाषा में कमी है, तो उसे सुधारने के लिए ऑनलाइन कोर्स या प्रैक्टिस सेशन में शामिल हों। **प्रोफेशनल एटीट्यूड:** यह स्किल आपके करियर की नींव मजबूत बनाता है। जॉब जवाइन करने से पहले, कार्यस्थल के ड्रेस कोड, व्यवहार और संस्कृति को समझने की कोशिश करें। हमेशा पॉजिटिव और प्रॉब्लम सोल्विंग अप्रोच अपनाएं। यदि आपसे कोई गलती होती है, तो उसे स्वीकार करें और उससे सीखें। यह आपके सहकर्मियों और बॉस के बीच आपकी विश्वसनीयता को बढ़ाएगा।



अपनी फील्ड से संबंधित तकनीकी और सॉफ्ट स्किल्स (जैसे कम्युनिकेशन, टाइम मैनेजमेंट, टीमवर्क) सीखें। ऑनलाइन प्लेटफॉर्म (जैसे कोर्स, एरा, उडेमी, लिंकडइन लर्निंग) से सर्टिफिकेशन कोर्स करें। प्रोग्रामिंग, डेटा एनालिसिस, डिजिटल मार्केटिंग जैसे ट्रेंडिंग स्किल्स पर फोकस करें, अगर वे आपके क्षेत्र से मेल खाते हों। **आत्मविश्वास-पहल:** पहली जॉब में आत्मविश्वास और पहल करने की क्षमता आपको जल्दी सफलता दिला सकती है। अपने विचारों को साझा करने से न डरें और नई जिम्मेदारियों लेने के लिए तैयार रहें। उदाहरण के लिए यदि किसी प्रोजेक्ट में सुधार की गुंजाइश है, तो सुझाव देने में संकोच न करें। हां, आत्मविश्वास और अहंकार के बीच संतुलन बनाए रखें। *

अपनी फील्ड से संबंधित तकनीकी और सॉफ्ट स्किल्स (जैसे कम्युनिकेशन, टाइम मैनेजमेंट, टीमवर्क) सीखें। ऑनलाइन प्लेटफॉर्म (जैसे कोर्स, एरा, उडेमी, लिंकडइन लर्निंग) से सर्टिफिकेशन कोर्स करें। प्रोग्रामिंग, डेटा एनालिसिस, डिजिटल मार्केटिंग जैसे ट्रेंडिंग स्किल्स पर फोकस करें, अगर वे आपके क्षेत्र से मेल खाते हों। **आत्मविश्वास-पहल:** पहली जॉब में आत्मविश्वास और पहल करने की क्षमता आपको जल्दी सफलता दिला सकती है। अपने विचारों को साझा करने से न डरें और नई जिम्मेदारियों लेने के लिए तैयार रहें। उदाहरण के लिए यदि किसी प्रोजेक्ट में सुधार की गुंजाइश है, तो सुझाव देने में संकोच न करें। हां, आत्मविश्वास और अहंकार के बीच संतुलन बनाए रखें। *

विशिष्ट पेड़
वीना गौतम

भारत में सड़कों के किनारे यूं तो पारंपरिक रूप से नीम, इमली, पीपल, बरगद, गुलमोहर, अशोक, कचनार आदि के पेड़ लगे देखे जाते हैं। लेकिन हाल के सालों में सड़कों के किनारे, शहर की पॉश कालोनियों, बड़े पार्कों और कई दूसरी जगहों पर एक चौड़ी लाल, पीली और नारंगी पत्तियों वाला पेड़ भी लगाया जाना शुरू हुआ है, जो जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड और पूर्वोत्तर के अलग-अलग इलाकों में खासतौर पर देखा जाता है। इसे हिमालयन मेपल या एप्सर ओब्लोणगम या कश्मीर मेपल या पेटेड मेपल या ओक भी कहते हैं। सरल शब्दों में यह मेपल का पेड़ है, जिसका मूल निवास यूं तो उत्तरी अमेरिका, यूरोप, उत्तरी अफ्रीका, चीन और एशिया के कुछ देशों में है, लेकिन 132 प्रजातियों वाले सैपिंगेसी परिवार के इस मेपल के पेड़ की कुछ प्रजातियां भारत में भी पाई जाती हैं।

मेपल कनाडा का राष्ट्रीय वृक्ष है, कनाडा के झंडे और राज्य चिन्ह में भी मेपल की पत्तियां देखी जा सकती हैं। मेपल का पेड़ अनुकूल परिस्थितियों में कई सौ सालों तक मजबूती से खड़ा रहता है। मेपल का पेड़ ताकत और

देसी आबोहवा का विदेशी पेड़ हिमालयन मेपल



सहनशीलता का प्रतीक माना जाता है। सर्दियों में मेपल के पेड़ से एक-एक करके उसकी रंग-बिरंगी सारी पत्तियां झड़ जाती हैं और पेड़ के नीचे चौड़ी और रंगीन पत्तियों का ढेर लगा जाता है। पहले यह भारत में सिर्फ हिमालयी क्षेत्र में ही देखता था, लेकिन अब देश के बड़े शहरों के सौंदर्यीकरण के चलते यह इन शहरों के खूबसूरत पार्कों, पॉश कालोनियों और चौड़ी सड़कों के किनारे भी देखा जाता है।

कई रूपों में उपयोगी: भारत में ज्यादातर पाए जाने वाले हिमालयन मेपल के बड़े फायदे हैं। इसकी लकड़ी, फर्नीचर और निर्माण के कार्य में बहुत उपयोगी साबित होती है। इसकी छाल और पत्तियों का उपयोग पारंपरिक चिकित्सा में किया जाता है। कई मधुमक्खी प्रजातियों को यह बहुत आकर्षित करता है, इसलिए यह शहद उत्पादन में बहुत सहायक होता है, क्योंकि इसकी लाल, पीली पत्तियां इसे बेहद आकर्षक और शानदार पेड़ का दर्जा दिलाती हैं, इसलिए विशेष तौर पर कश्मीर में इसे पार्कों के किनारे बड़े करीने से लगाया जाता है। जापानी मेपल जैसी कुछ प्रजातियों की भी अच्छी कीमत मिलती है। खूबसूरत पर्यटन स्थलों में यह जगहों की शोभा बढ़ाने और पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए भी लगाया जाता है। *

रूजफुल डिवाइस
संध्या सिंह

आज के डिजिटल युग में सीसीटीवी कैमरा महज एक तकनीकी उपकरण नहीं, बल्कि एक ऐसी 'तीसरी आंख' बन चुका है, जो हर पल, हर कोने में नजर रखता है- चाहे कोई जानता हो या न जानता हो। यह कैमरा न बोलता है, न टोकता है, लेकिन उसकी नजरें चुपचाप सब कुछ देखती और रिकॉर्ड करती हैं।

सब कुछ देखता चुपचाप: बाजार, स्कूल, दफ्तर, रेलवे स्टेशन, गलियां-हर जगह ये 'तीसरी आंख' मौजूद है। यह न केवल अपराधों को रोकने में मदद करती है, बल्कि न्याय दिलाने में भी एक अहम गवाह बन जाती है। कई बार लोग अपनी हरकतों से अनजान होते हैं कि कोई उन्हें देख रहा है, पर सीसीटीवी की आंख सब कुछ समेट रही होती है। हालांकि जहां यह सुरक्षा का प्रतीक है, वहीं इसे लेकर निजता पर सवाल भी उठते हैं। क्या हर जगह नजर रखना सही है? लेकिन मौजूदा हालात में, यह आंख समाज को सजग और जवाबदेह बनाने में सहायक सिद्ध हो रही है। इस तरह, सीसीटीवी आधुनिक युग की वह अदृश्य शक्ति है, जो बिना बोले भी हर किसी को यह एहसास दिलाती है- कोई देख रहा है।

सब पर नजर रखता सीसीटीवी कैमरा



इसीलिए इन दिनों कहते हैं जिंदगी कैमरों की जद में कैद हो गई है। हर पल हर जगह तमाम अदृश्य निगाहें हमें घेरे रहती हैं। **हर शहर में सुरक्षा नजर:** राजधानी दिल्ली में मेट्रो स्टेशन की सीढ़ियां चढ़ते ही जिस इबारत पर आपकी पहली नजर पड़ती है, वह एक चेतावनी होती है, 'सावधान आप कैमरे की निगाह में हैं।' बैंक में घुसिए, अस्पताल में प्रवेश करिए, कॉलेज की सीढ़ियां चढ़िए, मंदिर की इयोदी लांघिए हर जगह आपको इसी पहलें वाक्य के इन दिनों दर्शन होते हैं। दिन में ज्यादातर समय कैमरे की जद में रहना अब महज वीवीआईपी लोगों की जिंदगी का सच नहीं है। यह आम महानगरीय लोगों की जिंदगी की कहानी बन चुका है। सिर्फ देश की राजधानी दिल्ली का ही ये हाल नहीं है, मुंबई, कोलकाता, हैदराबाद, चेन्नई, पुणे, बंगलुरु जैसे तमाम महानगरों और अब तो मझोले और छोटे शहरों की भी यही कहानी बनती जा रही है। लखनऊ, कानपुर, भोपाल, जयपुर, गुवाहाटी, बनारस, अमृतसर सबकी यही कहानी है। क्योंकि जिंदगी का

हर पल खतरों, अविश्वास और विश्वासघात से जुड़ गया है। **संभालता सुरक्षा की जिम्मेदारी:** कभी लोगों की यादों को सहजने वाला कैमरा, आज लोगों की सुरक्षा का भार संभालता है या कम से कम उसे उसकी बदौलत सुरक्षा का मनोवैज्ञानिक सहायता देता है। कैमरा बिल्कुल नए अवतार में आ चुका है। मोबाइल क्रांति के बाद जब दुनिया की तमाम मशहूर कैमरा बनाने वाली कंपनियां बंद होने के कगार पर पहुंच गई थीं, तब शायद ही किसी ने सोचा होगा कि बहुत जल्द कैमरे का यह विलक्षण रूप सामने आएगा। आज कैमरे का पर्याय हो गए हैं सीसीटीवी कैमरे। सीसीटीवी कैमरे आज प्रमुख सेप्टिक के टूल की तरह उभरे हैं।

बढ़ता गया प्रचलन: एक जमाना वह भी था, जब सीसीटीवी कैमरों को दुकानदारों की दुकान का चौकीदार भर समझा जाता था। लेकिन जैसे-जैसे वक्त बदला और तकनीक पहले से कई गुना ज्यादा बेहतर हुई जबकि कीमतें पहले से काफी नीचे आईं तो फिर मानो, इनके इस्तेमाल की बहार ही आ गई। घटती कीमतों की वजह से सीसीटीवी कैमरे आम आदमी की पहुंच में आ गए। आज सीसीटीवी कैमरे न केवल सेप्टिक का एक सेंसर देते हैं, बल्कि जहां आपकी आंख नहीं पहुंच सकती, वहां तक भी आपको पहुंचाते हैं।

इसके अलावा, अविश्वास और विश्वासघात से जुड़ गया है। **संभालता सुरक्षा की जिम्मेदारी:** कभी लोगों की यादों को सहजने वाला कैमरा, आज लोगों की सुरक्षा का भार संभालता है या कम से कम उसे उसकी बदौलत सुरक्षा का मनोवैज्ञानिक सहायता देता है। कैमरा बिल्कुल नए अवतार में आ चुका है। मोबाइल क्रांति के बाद जब दुनिया की तमाम मशहूर कैमरा बनाने वाली कंपनियां बंद होने के कगार पर पहुंच गई थीं, तब शायद ही किसी ने सोचा होगा कि बहुत जल्द कैमरे का यह विलक्षण रूप सामने आएगा। आज कैमरे का पर्याय हो गए हैं सीसीटीवी कैमरे। सीसीटीवी कैमरे आज प्रमुख सेप्टिक के टूल की तरह उभरे हैं। **बढ़ता गया प्रचलन:** एक जमाना वह भी था, जब सीसीटीवी कैमरों को दुकानदारों की दुकान का चौकीदार भर समझा जाता था। लेकिन जैसे-जैसे वक्त बदला और तकनीक पहले से कई गुना ज्यादा बेहतर हुई जबकि कीमतें पहले से काफी नीचे आईं तो फिर मानो, इनके इस्तेमाल की बहार ही आ गई। घटती कीमतों की वजह से सीसीटीवी कैमरे आम आदमी की पहुंच में आ गए। आज सीसीटीवी कैमरे न केवल सेप्टिक का एक सेंसर देते हैं, बल्कि जहां आपकी आंख नहीं पहुंच सकती, वहां तक भी आपको पहुंचाते हैं।

हिंदी फिल्म जगत के महानतम फिल्मकारों में गुमार गुरुदत्त जे.के.ए. क्लासिक फिल्मों की गुरुदत्त की शानदार विरासत को उनकी बहू और पोतियां आज भी संभाले हुए हैं। गुरुदत्त के जन्मसँती वर्ष पर उन्हें मातृकता से याद करती हैं। साथ ही उनके जीवन के कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं पर एक नजर।

महान फिल्मकार गुरुदत्त की विरासत संभाल रहे परिजन

जन्मशती वर्ष / कैलाश सिंह

महान फिल्मकार और अभिनेता गुरुदत्त का जन्म 9 जुलाई 1925 को बंगलोर (अब बंगलूर) में हुआ था। उनके आई फिल्म 'बाजी' में गीता रॉय ने 'तदवीर से बिगड़ी हुई तकदीर बना ले' गीत गाया था। उनकी मखमली आवाज सुनकर गुरुदत्त अपना दिल दे बैठे। तीन साल तक कोर्टशिप चली और फिर 26 मई 1953

उन्होंने 'बाजी' के निर्देशन की जिम्मेदारी गुरुदत्त को दी और अपना वादा निभाया। इसी तरह जब गुरुदत्त ने 'सीआईडी' बनाई तो देवानंद को उसमें बतौर हीरो प्रस्तुत किया। **गीता दत्त से प्रेम और विवाह:** सन 1951 में पिता शिवशंकर रंगवालाक एक स्कूल टीचर थे और मां वसंथी पादुकोण गृहिणी थीं, जो कभी-कभी कहानियां भी लिखती थीं। माता-पिता ने उन्हें वसंत कुमार शिवशंकर पादुकोण नाम दिया, लेकिन बाद में उनका नाम बदलकर गुरुदत्त रख दिया गया। गुरुदत्त के माता-पिता कारवार (कर्नाटक) में रहते थे, लेकिन उन्हें अपना बचपन भवानीपुर (प. बंगाल) में गुजारना पड़ा, जिससे वह बंगाली भी अच्छी बोलने लगे। घर में पैसे की तंगी थी, इसलिए दसवीं के बाद कॉलेज न जा सके। उनके बकुट मामा (बालकिशन बेनेगल, जो श्याम बेनेगल के चाचा और गुरुदत्त की मां के कजिन थे) ने उन्हें उदय शंकर की नृत्य मंडली में शामिल करा दिया। गुरुदत्त ने वहां नृत्य सीखा। कुछ दिन उन्होंने टेलीफोन ऑपरिटर के रूप में भी नौकरी की। लेकिन मन नहीं लगा तो कोलकाता छोड़कर पुणे आ गए जहां प्रभात फिल्म कंपनी में उन्हें नृत्य निर्देशक की नौकरी मिली और फिर जीवन का रुख ही बदल गया।

पैसे हुई गुरुदत्त-देवानंद की दोस्ती: पुणे में जिस लॉडरी पर गुरुदत्त अपने कपड़े धुलवाते थे, वहीं पर देवानंद के कपड़े भी धुलने आते थे। एक दिन संयोग से दोनों की कमीजें आपस में बदल गईं और दोनों की मुलाकात हुई, जो दोस्ती में बदल गई। गुरुदत्त और देवानंद ने एक-दूसरे से वादा किया, जो भी पहले निर्माता बनेगा, वह दूसरे को अपनी फिल्म में काम देगा। पहले देवानंद निर्माता बन गए और

को गीता रॉय ने गुरुदत्त से शादी कर ली। उनके तीन बच्चे हुए- तरुण, अरुण और नीना। **बहू - पो ति यां संभाल रही हैं विरासत:** गुरुदत्त के पुत्र अरुण के घर में प्रवेश करते ही लिविंग रूम की दीवार पर फिल्म 'प्यासा' (1957) का पोस्टर लगा हुआ दिखाता है। दूसरी दीवार पर ब्लैक एंड वाइट फेमिली फोटो टंगा हुआ है, जिसमें गुरुदत्त, उनकी गायिका पत्नी गीता (राय) दत्त और उनके बच्चे हैं। मुंबई के इस घर में गुरुदत्त की मौजूदगी का एहसास हर जगह होता है। यह गुरुदत्त की बहू इफ्फत का घर है, जिसमें वह अपनी दोनों बेटियों करुणा और गौरी के साथ रहती हैं। इफ्फत ने गुरुदत्त के बेटे अरुण दत्त से शादी की थी, जो अब इस दुनिया में नहीं हैं। लेकिन वे अपनी दोनों बेटियों के साथ अपने परिवार की महान सिनेमाई विरासत को संभाले हुए हैं। गुरुदत्त की पोती गौरी बताती हैं, 'जब हम छोटे थे, तो हमें अपने दादा के कार्य से परिचय

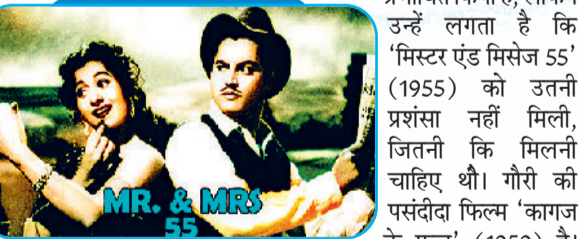


हमारे पिता ने करवाया था। पुणे में शाम को अक्सर बिजली गुल हो जाया करती थी और बिजली आने का इंतजार करते हुए डैडी अपने पैरेंट्स के बारे में बातें किया करते थे।

सिने जगत से जुड़ी हैं पोतियां: चूंकि पोतियों का अपने दादा गुरुदत्त की फिल्मों से परिचय किशोरावस्था में ही हो गया था, इसलिए वे उनके कार्य को बेहतर ढंग से समझ सकीं और तटस्थता के साथ उस पर अपनी राय भी कायम कर सकीं। करुणा को 'प्यासा' ने अधिक प्रभावित किया है, लेकिन उन्हें लगता है कि 'मिस्टर एंड मिससेज 55' (1955) को उतनी प्रशंसा नहीं मिली, जितनी कि मिलनी चाहिए थी। गौरी की पसंदीदा फिल्म 'कागज के फूल' (1959) है।

जब दोनों बहनें फिल्म प्रोफेशनल के तौर पर काम करने लगीं तो कुछ साल पहले उनका परिवार पुणे से मुंबई शिफ्ट हो गया। करुणा सहायक निर्देशक हैं और गौरी पृथ्वी थिएटर से जुड़ी हुई हैं। दोनों बहनें गुरुदत्त की विरासत को आगे बढ़ाने की इच्छुक हैं और उसी दिशा में कार्य कर रही हैं।

गुरुदत्त की जन्मशताब्दी वर्ष का जश्न: गुरुदत्त की जन्मशती आरंभ हो चुकी है। इस बारे में इफ्फत बताती हैं, 'परिवार के ऐसे अवसरों का हम प्राइवेटली जश्न मनाते हैं। लेकिन हम परिवार की परंपरा का पालन करते हुए अपने दिवंगत सदस्यों के पसंदीदा व्यंजन तैयार करके उन्हें पक्षियों को खिलाते हैं। यह परंपरा अरुण ने शुरू की थी।' गौरी भावुक होकर बताती हैं, 'हालांकि हमारे दादा गुरुदत्त की हमेशा ही हमारे जीवन में प्रभावशाली मौजूदगी रही है, लेकिन इस साल हम उसे कुछ अधिक ही महसूस कर रही हैं, क्योंकि 9 जुलाई 2025 को अगर वे होते तो सी बरस के हो गए होते। *



गुरुदत्त की बहू इफ्फत के साथ करुणा और गौरी दत्त से शादी की थी, जो अब इस दुनिया में नहीं हैं। लेकिन वे अपनी दोनों बेटियों के साथ अपने परिवार की महान सिनेमाई विरासत को संभाले हुए हैं। गुरुदत्त की पोती गौरी बताती हैं, 'जब हम छोटे थे, तो हमें अपने दादा के कार्य से परिचय